ISSN 2277-7660

एक अनूठी सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय व साहित्यिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

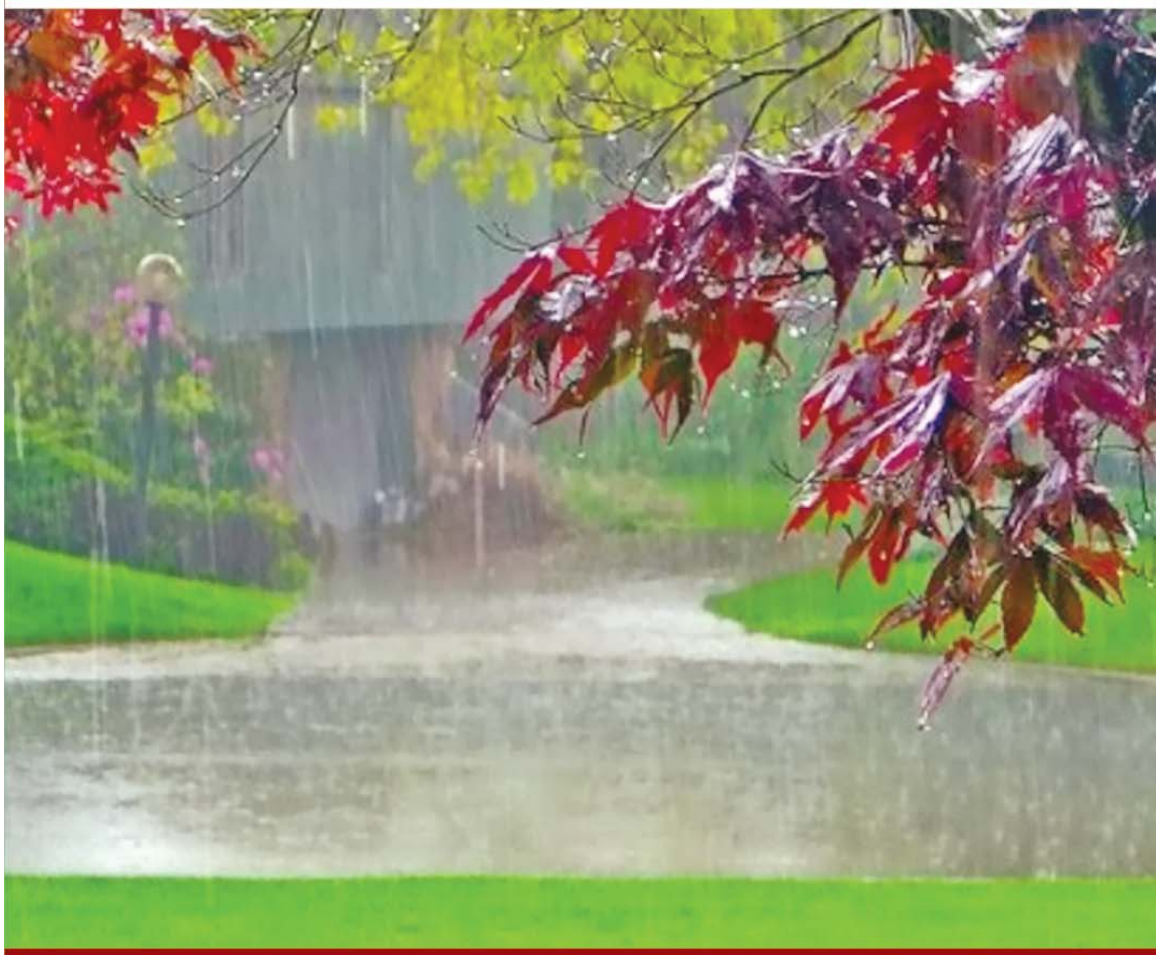

➤ वर्ष 64 ➤ अंक 7 ➤ जुलाई 2013

प्रकाशक

बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सभा कार्यालय दूरभाष

Tel.: 01662-225804
Mob. : 82957-03437
E-mail.: editor@amarjyotipatrika.com
info@amarjyotipatrika.com
Website.: www.amarjyotipatrika.com

कार्यालय पता:

'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125001 (हरियाणा)

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 70/-

आजीवन (50 वर्ष के लिए) सदस्यता शुल्क : 700/-

''अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें''

अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये

क्र.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	1
2.	सबद-18	2
3.	गुरु जाम्भोजी के ब्रह्म	3
4.	मोरा उपख्यान वेदूं	5
5.	मानवता का आभूषण 'क्षमा'	7
6.	पर्यावरण प्रहरी 'नीम'	9
7.	निश्चय कायों बायों.....	11
8.	उत्तर प्रदेश विधानसभा में	12
9.	गुरु वाणी में पर्यावरण संरक्षण	13
10.	जन्माष्टमी विशेषांक के लिए....	14
11.	भ्रूण हत्या और दहेज	15
12.	नारी की स्थिति	16
13.	बधाई संदेश	17
14.	चौमुख दीपक का महत्व	18
15.	बिश्नोई धर्म : सर्वश्रेष्ठ धर्म	19
16.	पर्यावरण एवं वन्यजीव	20
17.	नशा नाश की निशानी	22
18.	अक्टूबर में होगी जांभाणी....	23
19.	राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार	25
20.	श्री बी.डी. अग्रवाल ने दिया....	27
21.	बिश्नोई रत्न स्व. चौ. भजनलाल..	28
22.	श्री राणाराम ने किया दिल्ली में..	29
23.	श्री गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन..	30
24.	खेतगांव में सामूहिक विवाह...	31
25.	वीर बलिदानी बिश्नोइयों का....	32

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय...

जीवन की सार्थकता

मनुष्य तन प्राप्त करने की सार्थकता और जीवन के चरम लक्ष्य को लेकर सभी धर्म ग्रंथों व शास्त्रों में विशद् विचार-चर्चा हुई है। क्या मनुष्य केवल अन्य जीवों की भांति एक सामान्य जीव ही है, जो खाये-पीये, वंश वृद्धि करे और इस संसार से चला जाये? या मनुष्य जीवन प्राप्त करना कोई विशेष उपलब्धी व अवसर है, जिसका सदुपयोग करके यह जीवात्मा कोई उच्च स्थान प्राप्त कर सकती है। क्या भौतिक साधनों की प्राप्ति और उनका उपयोग बिल्कुल त्याज्य है? इन सब प्रश्नों पर विचार करके ही मनुष्य जीवन की सार्थकता पर विचार हो सकता है।

इसमें तो कोई संदेह नहीं कि जीव विज्ञान की दृष्टि से मनुष्य भी अन्य प्राणियों की भांति एक प्राणी है, जिसमें बुद्धि रूपी तत्त्व अन्य प्राणियों से अधिक विकसित है। जब मनुष्य एक प्राणी है तो एक प्राणी सुलभ क्रिया कलाप उसके लिए स्वाभाविक बात है। उसे सुसभ्य ढंग से जीवनयापन करने के लिए भौतिक सुविधाओं की भी आवश्यकता पड़ती है, जिसके लिए उसे भौतिक सामग्री भी जुटानी पड़ती है। यहां तक तो बात ठीक है कि वह जीवित रहने के लिए आवश्यक साधन जुटाए परन्तु समस्या तब उत्पन्न होती है जब वह इन भौतिक साधनों की प्राप्ति को ही जीवन का चरम लक्ष्य बना लेता है। इस स्थिति में मनुष्य सांसारिक भूल भुलैया के भंवरजाल में ऐसा फंसता है कि उसे फिर बाहर निकलने का द्वार मिलता ही नहीं और जीवन निरर्थक ही चला जाता है। केवल भौतिकता को ही जीवन की सार्थकता मानने वाला मनुष्य अन्य प्राणियों की भांति ही एक सामान्य प्राणी होता है।

धर्मशास्त्रों में ऐसा माना गया है कि मनुष्य जीवन के रूप में जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त करने का एक अवसर मिलता है, क्योंकि मोक्ष प्राप्त करने का एक मात्र उपाय भगवद्भक्ति होता है, जिसे केवल मनुष्य ही कर सकता है, अन्य प्राणी नहीं। आहार, नींद व वंशवृद्धि आदि सभी कार्य तो अन्य प्राणी भी करते हैं, फिर मनुष्य और अन्य प्राणियों में अंतर क्या हुआ? यदि मनुष्य समर्पण भाव से विष्णु का भजन करके अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है तो उसका आवागमन का चक्कर छूट जाता है और मनुष्य तन धारण करना सार्थक हो जाता है। गुरु जम्भेश्वर जी ने भी कहा है कि **'विष्णु अजंप्या जन्म अकारथ'** अर्थात् विष्णु भजन के बिना जीवन व्यर्थ है। हमारे द्वारा संग्रहित सभी भौतिक पदार्थ यहीं रह जाते हैं और साथ चलता है केवल विष्णु का नाम। यदि उसका स्मरण किया है तो वह साथ चलेगा अन्यथा गुरु महाराज ने कहा है- **'आतो काया ले आयो थो जातो सूको जागो'** अर्थात् इस संसार में आते समय तो हम शरीर साथ लेकर आये थे पर जाते समय तो बिल्कुल खाली हाथ ही जाना पड़ेगा।

सबद –18

जाट हरष प्रसन्न हुआ, देवजी दिया जिताय।
विश्नोई यों बोलिया, हम नहीं जाणै काय।
सब लोगन कूं देवजी, शब्द सुणायो एक।
भूला भेद न जाण ही, समझयां को गुरु एक।

अजाराम जाट ने इस सबद का श्रवण किया और अति हर्षित होकर कहने लगा–कि देवजी ने मुझे विजय दिला दी है। विश्नोई कहने लगे तुम्हारी विजय किस प्रकार से हुई? अब तक तुम ठीक से समझ नही पाये हो। तब गुरुदेव ने दूसरे सबद का उच्चारण किया–

सबद–18

ओ३म् जां कुछ जां कुछ जां कुछू न जांणी,
नां कुछ नां कुछ तां कुछ जांणी।

भावार्थ–जो व्यक्ति कुछ जानने का दावा करता है अपने ही मुख से अपनी ही महिमा का बखान करता है। वह कुछ भी नहीं जानता, अन्दर से बिल्कुल खोखला है और इसके विपरीत कोई व्यक्ति कहता है कि मैं कुछ भी नहीं जानता वह कुछ जानता है। अहंकार शून्यता ही व्यक्ति को ज्ञान का अधिकारी बनाती है। इस दुनिया में अपार ज्ञान राशि है इतनी छोटी सी आयु में कितना ही प्रयत्न करें तो भी व्यक्ति सदा अधूरा ही रहता है। यदि कोई पूर्ण होने का दावा करता है तो वह झूठा ही अहंकार है। उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के दरवाजे हमेशा के लिये बन्द कर लिये है।

ना कुछ ना कुछ अकथ कहाणी, ना कुछ ना कुछ अमृत बाणी।

इस महान संसार में भूत, भविष्य, वर्तमान कालिक अनेकों कहानियां कही जा चुकी है। अनेकानेक शास्त्र इन्हीं कथाओं से भरे पड़े हैं। सभी कुछ कहा जा चुका है। अब अकथनीय कुछ भी नहीं है किन्तु जो कुछ भी अब तक वाणी द्वारा कहा गया है या लिखा गया है वह तो केवल स्थूल संसार के विषयों तक ही सीमित रहा है। उस अमृतमय सत्चित आनन्द ब्रह्म का निरूपण नहीं हो सका है। अनुभव गम्य वस्तु को शब्दों में बांधना असंभव है। वेद के विषयों ने भी नेति–नेति कहकर अपनी वाणी को विराम दिया है।

ज्ञानी सो तो ज्ञानी रोवत, पढ़िया रोवत गाहे।

उस प्राप्य वस्तु अमृत तत्व की प्राप्ति न होने से आचरण रहित केवल शास्त्र ज्ञानी विद्वान और कर्मकाण्डी पंडित ये दोनों ही रोते है। जो व्यक्ति अपनी वस्तु रूप अमृत से वंचित होकर चाहे संसार की कितनी ही भोग–विलास सम्बन्धी सामग्री एकत्रित कर ले, आखिर तो उसे रोना ही पड़ेगा उन आनन्द रहित वस्तुओं में वह परमानन्द कहां है।

केल करंता मोरी मोरा रोवत, जोय जोय पगां दिखाही।

आनन्द रहित वह ज्ञानी उसी प्रकार रोता है जैसे श्रावण–भादवा के महिने में नाच क्रीड़ा करते हुऐ मोर मोरनी अपने बैडोल पैरों को देखकर रोते है। शरीर तो इतना सुन्दर दिया परन्तु आनन्द से वंचित क्यों रखा? विद्वान हो चाहे मूर्ख दोनों ही दुख में ही अपना जीवन व्यतीत कर देते है अपने समीप में होते हुऐ भी आनन्द की प्राप्ति नहीं कर सकते।

उरध खैणी उनमन रोवत, मुरखा रोवत धाही।

कुछ योगी लोग प्राणायाम द्वारा श्वांसों को ब्रह्माण्ड में स्थिर कर लेते है। श्वांस के साथ ही चंचल मन भी शांत हो जाता है किन्तु उस समाधी अवस्था से बाहर जब जगतमय वृति होगी तो वे योगी लोग भी रोते है, वापिस समाधिस्थ होने की चेष्टा करते है और मूर्ख लोग तो दिन रात संसार के प्रपंच में ही सुख मानकर दौड़ते है किन्तु कहीं कुछ प्राप्ति तो नहीं होती है।

मरणत माघ संघारत खेती, के के अवतारी रोवत राही।

जब पेड़ पौधों पर आया हुआ माघ अर्थात् मंजरी फूल आदि नष्ट हो जाते है तथा पककर तैयार हुई खेती पर तूफान ओले आदि गिरकर खेती आदि को नष्ट कर देते है तो किसान रोता है। उसी प्रकार से हमारे जैसे अवतारी लोग भी रोते है। यदि हमारे कार्य पूर्ण होने में विघ्न पैदा हो जाता है किन्तु हमारा रोना स्वकीय स्वार्थ के लिये न होकर परमार्थ के लिये ही होता है।इस दुखमय संसार में रोना तो सभी को ही पड़ता है।

जड़िया बूंटी जे जग जीवै, तो वेदा क्यूं मर जाही।

इस रोने से छूटने का उपाय जड़ी, बूंटी औषधियां नहीं हो सकती यदि औषधी मन्त्र आदि उपाय हो तो इनसे दुख छूट जाये जगत जीवन को धारण कर ले, अमर हो जाये तो वैद्य लोग क्यों मर जाते है, क्यों दुखी होते है क्यों रोते है।

खोज पिराणी ऐसा विनाणी, नुगरा खोजत नाही।

यदि तुझे दुखों से छूटना है तो हे प्राणी! उस नित्य निरंजन सद्चिद् आनन्द रूप तत्व की खोज करके प्राप्ति कर तथा तन्मय जीवन को बना यही उपाय है। नुगरा मनमुखी हठी लोग तो उसकी खोज नहीं कर सकते और दुखों से भी नहीं छूट सकते।

जा कुछ होता ना कुछ होयसी, बल कुछ होयसी ताही।

इस संसार पर कभी भी विश्वास नहीं करना, यह सदा ही परिवर्तनशील है इस संसार में वह नित्य अमृत कहां से प्राप्त होगा। जहां पर कभी कुछ नगर–गांव आदि थे वहां अब कुछ भी नहीं है और आगे भविष्य में भी हो सकता है फिर कभी वहां पर चहल–पहल हो जाये, अन्य ही कोई नगर बस जाये। यही संसार का मिथ्या होने का प्रमाण है। **साभार–जंभसागर**

गुरु जाम्भोजी के ब्रह्म सम्बन्धी विचारों का वेद, उपनिषद्, गीता से तुलनात्मक अध्ययन

धर्म का मूल स्वरूप रहस्य से आच्छादित है, किन्तु हम स्वीकार कर सकते हैं कि उसका प्राचीनतम रूप प्राकृतिक शक्तियों और उपादानों की उपासना का था। इस धर्म के साथ मिलकर पुराकथा परम सत्ता के बारे में प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करती है। धीरे-धीरे तर्क कल्पना का स्थान लेता है और पुराकथा के स्थान पर विश्व-विज्ञान और दार्शनिक कारण मीमांसा का आरम्भ होता है। पश्चिमी विद्वानों ने धर्म और दर्शन की विचार-सन्तति के विकास के कई सोपान या स्तर माने हैं, जिनमें धर्म, पुराकथा और विश्व-विज्ञान परस्पर मिश्रित हैं। ये सोपान हैं- बहुदेववाद, एकेश्वरवाद, अद्वैतवाद या एकवाद।

ब्रह्म-विचार :-

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक धर्म से लेकर आज तक निरन्तर परम तत्त्व को अनेकानेक नामों से सम्बोधित किया जाता है। इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक श्री जाम्भोजी ने मुख्यतया परम तत्त्व को ''ब्रह्म'' नाम से अभिहित किया है। उनकी ब्रह्म सम्बन्धी अवधारणा मुख्यता वैदिक धर्म पर (उपनिषदों) पर आधारित है।

श्री जाम्भोजी ने स्पष्टत: अभिव्यक्त किया है कि ब्रह्म सम्पूर्ण जगत् का नियन्ता सृष्टा, संहारकर्ता और कारण है। इसी तत्त्व को ''विष्णु'' नाम से कहकर बार-बार यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि परम स त्ता एक ही है, जो सम्पूर्ण विश्व में परिव्याप्त है।

गुरुमुखी प्रवृत्ति के फलस्वरूप जीव जैसे अपने मूल की ओर उन्मुख होता है, वैसे ही परम तत्त्व अथवा ब्रह्म की ओर भी उन्मुख होता है तथा मूल की प्राप्ति के साथ उसे परम तत्त्व की भी प्राप्ति हो जाती है। यही उसके लिए ब्रह्म का साक्षात्कार है। इसी को लक्ष्य करके ''सबदवाणी'' में कहा गया है -

गुरु चीन्हूं गुरु चिन्ह पुरोहित ..... सो गुरु परतकि जांणी।
(1 : 1-7)

अर्थात् गुरु या विष्णु के दो अर्थ हैं - प्रथमत: लौकिक गुरु तथा द्वितीय परम सत्ता या विष्णु। लौकिक गुरु के गुण है - सहज, शील, नाद और बिन्दु। संक्षेप में जो सहज जीवन पद्धति अपनाता है (सहज) जिसकी कथनी और करनी में पूर्ण सामंजस्य है और जो जितेन्द्रीय है (शील) तथा जो ब्रह्म और आत्म को (नाद-बिन्दु) जानता है, वही गुरु कहलाने का अधिकारी है।

गुरु को परम् तत्त्व या विष्णु मानकर उसके स्वरूप का वर्णन करते हुए जाम्भोजी कहते हैं कि षट् दर्शन जिसके स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं, जिसने स्वेच्छा से संसार बर्तन की स्थापना की है, उस गुरु को या परब्रह्मा आदि प्रमाणों से जानो, जिसको प्राप्त करना अति कठिन है, वाणी जिसके विषय में निरन्तर है, जिसमें रूद्र समाया हुआ है, जो काल से परे हैं, वह गुरु स्वयं तो सन्तोषी है, किन्तु अन्य सभी का पोषण करता है, वह तत्त्व स्वरूप परमानन्द है।

गुरु जाम्भोजी ने अद्वैत दर्शन के प्रतिपादक शंकराचार्य के समान परम तत्त्व को अनिवर्चनीय कहा है, क्योंकि परम तत्त्व को न तो सत् कहा जा सकता है और न असत् वह सत्-असत् से विलक्षण अनिवर्चनीय है।

ब्रह्म को उपनिषदों में ''नेति-नेति'' कहा गया है, जो कि जाम्भोजी को भी स्वीकार्य है। नेति-नेति अर्थात् ब्रह्म में यह गुण नहीं है, वह गुण नहीं है। तात्पर्य यह है कि ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन हम शब्दों के द्वारा नहीं कर सकते तथा उस तत्त्व को हम गुणों से विभूषित नहीं कर सकते है। इस सम्बन्ध में जाम्भोजी ने सबदवाणी में कहा भी है कि -

जां कुछि जां कुछि तां कुछि न जांणी।
नां कुछि नां कुछि तां कुछि जांणी।
नां कुछि नां कुछि अकथ कहांणी।
नां कुछि नां कुछि इम्रत वांणी॥
(16:1-4)

अर्थात् जो यह कहते हैं कि हम ब्रह्म के विषय में कुछ-कुछ जानते हैं, वे वास्तव में कुछ भी नहीं जानते और जो यह कहते हैं कि हम ब्रह्म के विषय में कुछ भी नहीं जानते, वे कुछ-कुछ जानते हैं। वस्तुत: ब्रह्म के विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है, उसका स्वरूप वर्णन अकथनीय है। उसके विषय में नेति-नेति ही कहा जा सकता है, जैसे अमृत का स्वाद वाणी का विषय न होकर अनुभव का विषय है। वैसे ही ब्रह्मानन्द अनुभव का विषय है, वाणी से उसका बखान नहीं किया जा सकता।

गुरु जाम्भोजी ने ब्रह्म की अनंतता एवं सर्वव्यापकता के विषय में कहा है कि -

जदि पवंण न हुंता पाणी न हुंता.... तदि हुंता एक निरंजंण सिंभू। **(3:1-21)**

अर्थात् सृष्टि की आदि से पूर्व यानि कि जिस समय कुछ भी नहीं था, उस समय एक निरंजन स्वयंभू था और धुंधलेपन की स्थिति थी। ''अहं ब्रह्मास्मि'' के रूप में जाम्भोजी का कथन है कि मैं तब भी था, अब हूँ और भविष्य में भी रहूंगा।

जाम्भोजी ने ब्रह्म की अपारता और असीमता का वर्णन करते हुए कहा है कि –

मछी मछ फिरै जल भीतरि तिहंका माघ न जोयबा
परम तंत है अैसा आछे उरवार न तायै पारूं
ओवड़ छेवड़ कोइय न थीयो तिंहका अन्त लहीबा कैसा (26:1-6)

अर्थात् जल में मछली और मच्छ मिलते हैं, किन्तु उनका मार्ग नहीं जाना जा सकता है, परमतत्त्व इसी प्रकार अगम्य हैं, उसका आर-पार नहीं, न ही उसका कोई ओर-छोर, वह अपार और असीम है। अत: उसको पूर्णरूपेण कैसे जाना जा सकता है। वह अनन्त है, उसका अन्त कैसे किया जा सकता है?

गुरु जाम्भोजी ने परमतत्त्व या ब्रह्म को सर्वव्यापी एवं रहस्यमयी बताते हुए कहा है कि –

सपत पयाले त्यौंह तिरलोके ..... अवर न बूझिबा कोई। (43:1-6)

अर्थात् परमतत्त्व सातों पातालों में, तीनों लोकों में बाहर और भीतर सर्वत्र सर्वदा एकरूप वर्तमान है, जहां भी देखा जाए वहां वही है। इस परमतत्त्व को गुरु ज्ञान से जाना जा सकता है। सतगुरु इस संसार में वर्तमान है, उसने सतपथ बताया है और भ्रान्तियों को दूर किया है, जो उससे मिलता है ज्ञान ग्रहण करता है, वह परम तत्त्व के रहस्य को जान सकता है और कोई भी उसके रहस्य को नहीं जान सकते ।

इसी क्रम में गुरु जाम्भोजी द्वारा ब्रह्म के सगुण रूप की स्वीकार्यता का उल्लेख भी आवश्यक है। गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी में कहीं-कहीं ब्रह्म के सगुण रूप का भी वर्णन मिलता है और वे उसमें दया, करुणा आदि श्रेष्ठ गुणों को भी स्वीकार कर लेते हैं।

दया रूपी म्हे आप बखांणां, सिंघार रूपी म्हे आप हती। (63:65-66)

अर्थात् दयालु होकर मैं स्वयं ही जीवन दान देता हूं और संहारक रूप में स्वयं ही मारता हूँ अर्थात् जगत और जीव की उत्पत्ति लय का आश्रय स्थल मैं हूँ और स्वयं इनसे परे हूँ।

ईश्वर का यह रूप भक्ति का विषय है। भक्ति एवं ज्ञान में अन्तर अवश्य है, परन्तु विरोध नहीं। भक्ति में आधार के रूप में ज्ञान की सत्ता रहती ही है, परन्तु अन्तर यह है कि यहां भाव की प्रधानता होने से ईश्वर का सगुण रूप भक्त की भक्ति का विषय बनता है।

गुरु जाम्भोजी द्वारा बताये गये परम तत्त्व स्वरूप वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जाम्भोजी अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद के समर्थक थे। गुरु जाम्भोजी का अद्वैतवाद बहुत कुछ शंकराचार्य के अद्वैतवाद से समानता रखता है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर या ब्रह्म अवैयक्तिक है और जगत् में पूर्णतया व्याप्त है। दूसरे शब्दों में कहें तो जगत की रचना ईश्वर की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

भारतीय दर्शन में उपनिषदों तथा गीता के विश्व रूप दर्शन में सर्वेश्वरवाद का उदाहरण मिलता है। ईशावास्योपनिषद् में यह उक्ति मिलती है कि जो कुछ जगत् में है वह ईश्वर से है। ''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किचिज्जगत्यां जगत'' इसी तरह सर्वेश्वरवाद का उदाहरण गीता में भी मिलता है।

अर्थात् जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्मस्वरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं हूँ और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता, क्योंकि वह मेरे से एकीभाव से स्थित है।

भारतीय दर्शन में विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों में छह प्रमाणों को माना जाता है यथा प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापति एवं अनुपलब्धि। यद्यपि जाम्भोजी ने ब्रह्म नामक तत्त्व को साक्षात् ही माना है, लेकिन प्रमाणों के आधार पर वे शंकराचार्य के समान केवल अनुभव प्रमाण से ही ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करते हैं। उन्होंने एक शब्द में कहा है कि –

मोरा उपख्यांन वेदू कणं तंत भेदूं
सासत्रे पुस्तके लिखणां न जाई।
मोरा सबद खोजो ज्यूं सबदे सबद समाई।।
(12:1-3)

अर्थात् मेरा कथन मेरे वेद ज्ञान है, सार रूप में परम तत्त्व का भेद बताने वाला है, परम तत्त्व अथवा तत्त्वाज्ञान अनुभव का विषय है। शास्त्रों और पुस्तकों में उसका स्वरूप लिखा नहीं जा सकता है। जैसे शब्द, शब्द ब्रह्म में समाया हुआ है, उसी प्रकार मेरी वाणी में (सबदों में) परम तत्त्व का रहस्य वर्णित है, उसे खोजो। अत: परम तत्त्व का ज्ञान अनुभव का विषय है, इसका प्रत्यक्षादि अन्य प्रमाणों के द्वारा ज्ञान नहीं किया जा सकता।

❐ डॉ. (श्रीमती) इन्द्रा बिश्नोई
दर्शन शास्त्र विभाग,
डूंगर राजकीय महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

मोरा उपख्यान वेदूं

भगवान जम्भेश्वर जी ने अपनी वाणी में घोषणा की, **मोरा उपख्यान वेदूं** अर्थात मेरी वाणी वेद है। जन श्रुति के अनुसार वेद एक ईश्वरीय कृति है। अत: गुरु जी की इस घोषणा के तत्वार्थ को समझने के लिए हमें वेद सम्बन्धित कुछ विशेष तथ्यों का अन्वेषण करना अनिवार्य है। इस विषय में हम मुख्य रूप से केवल तीन बिन्दुओं पर ही विचार करेंगे- क्या वेद सृष्टि रचना का अभिन्न अंग हैं। क्या वेद की रचना मानव सृष्टि के बाद हुई ? और क्या वेदों का कोई अन्य उद्देश्य भी है।

वर्तमान सृष्टि की रचना और उसकी अकाट्य संचालन व्यवस्था बताती है कि यह रचना एक महानतम बौद्धिक व वैज्ञानिक संरचना है। बुद्धि चेतना का गुण है। अत: स्वयं सिद्ध है कि यह सृष्टि किसी अनन्त बौद्धिक, अनन्त सामर्थ्य युक्त, अनन्त ज्ञानी, अनंत ऐश्वर्यवान तथा साधन सम्पन्न चेतन सत्ता का निर्माण है। परम सत्ता चूंकि सर्वसमर्थ है। अत: उसमें किसी प्रकार की इच्छा का कभी भी उद्भव होना अस्वाभाविक है। अत: इस सृष्टि का स्वयं उसके लिए कोई प्रयोजन नहीं हो सकता है। स्पष्ट है कि इस सृष्टि की रचना उस दयानिधान ने, जीव जगत के लिए ही की, जिसका एकमात्र उद्देश्य सभी जीवों का सुविधानुसार उत्तरोत्तर विकास करना है। इस विकास के बाद की चरम परिणति मानव संरचना है जो सृष्टि रचियता की सर्वोत्तम कृति है।

यह लेख स्व. बलबीर सिंह बिश्नोई द्वारा हरिद्वार संगोष्ठी में पढ़ा गया था। वरिष्ठ जांभाणी साहित्यकार बलबीर सिंह जी का अप्रैल में निधन हो गया। उनकी प्रति स्मृति में यह लेख यहां प्रकाशित है-सम्पादक

यहां एक आश्चर्य का विषय है कि सृष्टि का एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी एक बात में सभी जीवों से पिछड़ा हुआ है। अन्य सारे जीवों को जहां अपने जीवित रहने भर का नैसर्गिक ज्ञान, जन्म से ही प्राप्त होता है वहीं मानव शिशु सफेद कागज के समान जन्म लेता है। उसे दूध पीना, लेटना, बैठना, खड़े होना, चलना, दौड़ना, खेलना, पढ़ना, स्वस्थ रहना तथा स्वस्थ रहना तक सिखाना पड़ता है। इस सबके लिए उसे पग-पग पर पराश्रय की अनिवार्यता अपेक्षित है। इसीलिए धर्म-प्राण भारत में गुरु की महिमा का मुक्त कंठ से बखान किया जाता है।

हमने देखा है कि मनुष्य बिना सिखाये कुछ भी नहीं सीख सकता है। मानव जाति की यह अक्षमता, प्रथम दृष्टया तो परम सत्ता का उसके प्रति किया गया अन्याय दिखाई देता है किन्तु गहन अध्ययन से पता लगता है यह भी चूक रहित सृष्टि व्यवस्था का एक सोद्देश्य अंग है। मनुष्य और अन्य जीवों के बीच एक विशेष अंतर यह है कि जहाँ सभी जीवों में वरिष्ठता का आधार शरीर मात्र है। वहीं मानवीय वरिष्ठता का मानक उसकी मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक उन्नति है जिसे विकसित करने के लिए अपेक्षित समय और प्रयास की दरकार है। यदि यह सब भी सभी को जन्म से मिला होता तो व्यक्ति के व्यक्तिगत पुरुषार्थ का क्या महत्व रह जाता ? इसी आधार पर मनुष्य योनि को कर्म योनि और अन्य योनियों को भोग योनि की संज्ञा मिली।

इस विषय को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हमें मानव जीवन के अन्य पक्षों की भी सूक्ष्म समीक्षा करनी होगी। जग निर्माता की ओर से मानव को पांच ज्ञानेन्द्रियां प्राप्त हुई जिनके माध्यम से वह संसार से परिचय प्राप्त करने में समर्थ हुआ। इन पांचों ज्ञानेन्द्रियों के लिए परम सत्ता ने पांच ही 'सहायक विषयों' का निर्माण भी किया जिनकी सहायता के बिना कोई भी इन्द्रिय अपना निर्दिष्ट कार्य सम्पन्न नहीं कर सकती। ये पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं- आंख, नाक, कान, जीभ और त्वचा तथा इनके सहायक विषय हैं क्रमश:- प्रकाश, गंध,शब्द, रस एवं स्पर्श। मनुष्य को यदि ज्ञानेन्द्रियां तो मिल जाती किन्तु उनके सहायक विषयों का निर्माण न हुआ होता तो कोई भी इन्द्रियां अपना निर्दिष्ट कार्य नहीं कर पाती और इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों का निर्माण भी निष्प्रयोजन सिद्ध होता। इस अवस्था में रचनाकार की अक्षमता ही सिद्ध होती। अत: स्वयं सिद्ध है कि ज्ञान स्वरूप परम सत्ता ने इन्द्रियों और उनके सहायक विषयों का निर्माण भी यथोचित्त ढंग से साथ-साथ ही किया।

इन ज्ञानेन्द्रियों के अतिरिक्त मनुष्य को एक और सौगात भी बुद्धि के रूप में प्राप्त हुई। अन्य इंद्रियों के समान ही बुद्धि को भी एक सहायक विषय की अनिवार्यता है जिसे ज्ञान कहते हैं। बुद्धि के बिना अपना निर्दिष्ट कार्य नहीं कर सकती, इसलिए इसे छठी ज्ञानेन्द्रिय भी कहा जाता है। चूंकि बुद्धि भी अपने विषय के बिना निष्क्रिय है। अत: उपर्युक्त न्याय के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों और उनके सहायक विषयों के समान ही बुद्धि और उसके सहायक विषय 'ज्ञान' अर्थात् 'वेद' का निर्माण भी परम सत्ता ने स्वयं ही किया। इसी कारण महर्षि पतंजलि ने सृष्टि निर्माता ईश्वर को गुरुओं का भी आदि गुरु कहा, 'स पूर्वेषामपि गुरु:।'

उपर्युक्त स्वयं सिद्ध तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यदि मानव सृष्टि के आदि में ही वेद का प्रकाश न हुआ होता तो मानव बुद्धि का विकास भी न होता। उस दशा में मनुष्य न तो कुछ सीख पाता और न बोल पाता। वह कोई भी कार्य सही ढंग से नहीं कर सकता था। परिणामतः सारी मानव जाति गूंगे, बहरे और उन्मादी व्यक्ति के समान आचरण कर रही होती जो स्वयं सृष्टि निर्माता के लिए भी उपहास का ही कारण बनती है। अतः स्पष्ट है कि वेदों की रचना मानव सृष्टि का एक अपरिहार्य अंग है।

वेद, उपनिषद् आदि शास्त्र वर्तमान समय में आम आदमी की पहुँच से परे जा चुके हैं। जन सामान्य के बीच अब वे पठन-पाठन व चिंतन-मनन की सामग्री न होकर केवल श्रद्धा और पूजा की वस्तु रह गए हैं। अतः देश, काल और परिस्थितियों का आंकलन करते हुए वेद का अनिवार्य ज्ञान बांटने के लिए, ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित होकर अनेक महान विभूतियां समयानुसार धरती पर अवतरित होती रहती हैं। कैवल्य ज्ञानी भगवान जम्भेश्वर जी इस युग की ऐसी ही एक महानतम विभूति थे। कैवल्य ज्ञानी के विषय में महर्षि पातंजलि ने कहा '**सर्वभावाधिष्ठातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं सर्वज्ञातृत्वं च**-3/49 अर्थात् कैवल्य ज्ञानी को सर्वभावों अर्थात् पंच भूतों पर पूर्ण अधिकार तथा सर्वज्ञता प्राप्त होती है। ईश्वर के विषय में उन्होंने कहा, '**तत्र निरतिशंय सर्वज्ञ बीजम**-1/25'। अर्थात् ईश्वर निरतिशय सर्वज्ञाता का बीज है। सारे संसार में जो ज्ञान फैला है उसका आदि स्रोत ईश्वर ही है। यह 'सर्वज्ञ बीज' कैवल्य ज्ञानी में पल्लवित पुष्पित तथा पूर्णतः फलित होता है। अतः कैवल्य ज्ञानी ईश्वर की निकटतम सत्ता होती है और उनका पृथ्वी पर अवतरण भी कभी-कभी ही होता है। इस प्रकार स्वयं सिद्ध है कि श्री जम्भेश्वर वाणी साक्षात् वेद-वाणी है जो भगवान जम्भेश्वर जी के मुख से कालानुकूल जन भाषा में प्रकट हुई।

वेद 'ज्ञान' का पर्याय है और ज्ञान का मूल है आदि गुरु परमेश्वर। अतः मानव मात्र का परम कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे अर्थात् ईश्वर से निकटतम सम्बन्ध स्थापित करे वेद ने स्वयं आदेश दिया-

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त् उत्तरं। देवं-देवत्रा सूर्य मगन्म ज्योति रूत्तमम्-वेद अर्थात् सभी मानव उस सूर्य रूप व सब जगत के शासक उस ईश्वर को जाने को अंधकार से परे, आनन्द स्वरूप, दिव्य और देवत्व का दाता है तथा जो प्रलय के बाद भी यथावत विद्यमान रहता है।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसम् देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम्-वेद अर्थात् जिस परम सत्ता से यह सारा जगत उत्पन्न हुआ और जो इसका एकमात्र यथार्थ ज्ञाता है, उस दिव्य सत्ता की ओर संकेत करता हुआ सृष्टि का प्रत्येक कण, एक-एक झंडा है ताकि विश्व के सभी मानव उस सूर्य को देख सके।

इसी प्रकार भगवान जम्भेश्वर ने सबद-04 में सिद्ध किया कि हम ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु को नहीं देख सकते, '**जद पवन न होता पाणी न होता, न होता धर गैणारुं चन्द न होता सूर्य न होता न, न होता गंगदर तारूं**-जब पवन, पानी, पृथ्वी, आकाश, सूर्य और तारकावलि आकाश गंगाए (निहारिकाएं) भी न थी।' '**गऊ न गोरू माया जाल न होता-**' तथा जब गौ आदि प्राणी जगत व उन्हें भ्रमित करने वाली माया भी न थी '**तद होता एक निरंजन शिम्भू कै होता धंधूकारुं**-तब या तो एकमात्र निरंजन स्वयं-भूः अर्थात् अव्यक्त होने पर भी स्वेच्छा से अभिव्यक्त होने की सामर्थ्य वाला ईश्वर था अथवा अव्यक्त पदार्थ जगत था जिसे वैज्ञानिकों ने 'डार्कमैटर' कहा और जिसमें स्वैच्छिक अभिव्यक्ति का नितान्त अभाव था जो आज भी उसके विकसित रूप पदार्थ में ज्यों का त्यों विद्यमान है। यही कारण है कि कोई भी वस्तु बिना छुए अपनी जगह से हिल भी नहीं सकती। स्वयं सिद्ध है कि स्वैच्छिक अभिव्यक्ति की सामर्थ्य वाले अव्यक्त स्वयं-भूः नामक बल के सक्रिय व्यापकत्व के कारण ही, यह निष्क्रिय डार्कमैटर पदार्थ जैसे साकार रूप में अभिव्यक्त हो पाया जिसे सृष्टि कहते हैं। स्पष्ट है कि जिस प्रकार सारा दृश्य जगत सूर्य का ही प्रतिबिम्ब है, उसी प्रकार सृष्टि के सारे आकारों में निराकार ईश्वर ही मूर्तिकार है।

❐ **बलबीर सिंह बिश्नोई**
बिश्नोई कॉलोनी-सर्किट हाउस के पीछे,
दिल्ली रोड़, मुरादाबाद (उ.प्र.)

पाठकों के लिए सूचना

आपको सहर्ष सूचित किया जाता है कि आपकी पुरजोर मांग का सम्मान करते हुए बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति पत्रिका का जन्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करना स्वीकृत किया है। यह विशेषांक अगस्त-सितम्बर का संयुक्त अंक होगा, इसलिए अगस्त का अंक प्रकाशित नहीं होगा। जिन पाठकों का सदस्यता शुल्क अगस्त तक पूरा हो रहा है, वे समय से अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवाकर अपनी विशेषांक की प्रति सुरक्षित करें। नये पाठक भी समय रहते सदस्य बनकर लगभग 150 पृष्ठों (विज्ञापन सहित) में प्रकाशित होने वाले इस भव्य विशेषांक की अपनी प्रति सुरक्षित करें क्योंकि यह विशेषांक सीमित संख्या में ही प्रकाशित होगा। **-सम्पादक**

मानवता का आभूषण 'क्षमा'

क्षमा और दया मानवता के उत्तम लक्षण हैं। क्षमा, दया करने वाले के हृदय के भीतर का प्यार एवं उनके द्वारा भलाई के लिए किये जाने वाले सभी कार्यो के प्रति विनम्र रूप से उनकी महानता को स्वीकार कर स्नेह प्यार के बंधन को मजबूत करता है क्योंकि श्रेष्ठ, शालीनता और प्रेम भरे हृदय में अधिकार शक्ति होती है।

क्षमा, दया में जो रस आया।
क्षमा, दया से मन हर्षाया।।
है यह सुंदर सुगंधित शब्द।
सभी को हर्षाता यह शब्द।।

हमारे समाज में क्षमा, दया, सरलता और सत्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का कहना कि 'क्षमा रूप तप कीजै' पाप करने वाला छोटा है या बड़ा और यदि वह बराबर का भी है, तो उसके द्वारा अपमानित होने पर भी क्षमा कर देना ही उचित है।

समाज प्रेमी लाभ उठायें।
क्षमा, दया कर समाज को सफल बनायें।।

यदि अपमानित करने वाला अपने से छोटा है, बड़ा है, या बराबर का उसके द्वारा अपमानित होकर भी उसे क्षमा कर देना ही उचित है, क्योंकि हमारी संस्कृति गलतियों को क्षमा कर समाज के लोगों को अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करती है। इसीलिए मनुष्य में नम्रता, ओज, निर्भीकता, चुनौति और जीवन के सम्मान का कर्म छू लेने का आग्रह भी पाया जाता है क्योंकि गलती होने पर क्षमा कर देने से श्रेष्ठतर कुछ भी नहीं है।

क्षमा और दया की प्रवृति हर स्त्री-पुरूष और बच्चों में शुरू से स्वाभाविक रूप से पाई जाती है। क्षमा शब्द धारण करने से हृदय निर्मल होता है। यह एक निर्मल और सरल शब्द है जिसके लक्ष्य की पूर्ति में आनन्द ही आनन्द है। इसमें सुख है, हर्ष है, उत्साह है, खुशी है, शांति हैं, सुख का अनुभव एवं अलौकिक आनंद की प्राप्ति भी है। यह शब्द बहुत सुगम शास्त्र-सम्मत और युक्ति संगत के साथ है। साथ हर समय प्रसन्नता और गुरु जी के प्रति मुग्धता रहती है। जिस प्रकार से हम सब पर गुरु जी की कृपा रहती है, उसी तरह से हम सब भी औरों के लिए क्षमा और दया का पात्र बनने का प्रयास करें क्योंकि यह दोनों शब्द 'कल्याणकारी' हैं।

अपनी गलती होने पर हम क्षमा मांग कर अपनी ही भलाई करते हैं। इससे हमारे जीवन का पहलू अधिक अच्छाई की ओर अग्रसर होता है और क्षमा करने वाले का दायरा भी विस्तृत होता चला जाता हैं। कहते हैं कि **क्षमा बड़न को चाहिए छोटन को उत्पात।**

अर्थात् किसी की गलती या अपराध को क्षमा कर देना यह बहुत बड़ी क्षमाशीलता का अहसास कराता है अर्थात् ''**क्षमा वीरस्य भूषणम्**'' इसका अर्थ है कि क्षमा कर देना वीरों का गहना होता है। क्षमा कर देना बड़ी हिम्मत वाली बात होती है।

क्षमाशीलता का नाद बजाया सच्चे गुरु ने।
सोया समाज जगाया सच्चे गुरु ने।।

क्षमा कर देना हमारी संस्कृति का अहम् गुण हैं। हमारे देशवासियों ने तो दुश्मनों तक को क्षमा कर दिया है, हमारे देश की संस्कृति में मैत्री में ''**सव्बभूयेषू वैर मज्झण केर्णाव**'' का आशय है कि सभी जीवों में मैत्री भाव बना रहे, कोई भी किसी से वैर भाव न रखें। श्री गुरु जी का कहना है कि दोषियों को क्षमा करना, क्षमा करना भी बड़ा साहस का काम होता है। वाणभट्ट ने तो क्षमा को '**भूल सर्वतपसम्**' क्षमा कर देना ही कहा है। महाभारत में कहा है कि '' क्षमा असमर्थ मनुष्यों का गुण हैं और समर्थ मनुष्यों का भूषण है। क्षमाशील को न रोग सताता है और न ताप, हर धर्म, दार्शनिक तथा ज्यादातर लोगों ने भी क्षमा कर देने की महिमा पर जोर दिया है। क्षमा भी एक तरह से परमधर्म के समान है। यही क्षमा शब्द सर्वधर्म का आधार है क्योंकि हमारे समाज में जहां सहिष्णुता है, वहीं क्षमा है, दया है और सौहार्द है, सहयोग है, शांति है, मानव समाज और देश का विकास भी है, श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान अकेले होकर भी जीत गये, क्योंकि उनके साथ सत्य था, विष्णु भगवान थे, क्षमा कर देने की भावना थी, गलती होने पर क्षमा मांगने से अच्छे परिणामों का संचार होता है, अच्छा अनुभव होता है, गलती होने पर क्षमा मांगने का स्वर्ण काल होता है, यह शब्द वीरों का आभूषण है, गलती होने पर दया कर क्षमा कर देना ही उचित है। ऐसा मेरा मत हैं, बड़ों का कर्तव्य है कि उत्साह और उमंग के साथ गलती करने वाले को क्षमा करे।''

यदि कहीं भी किसी से खराब व्यवहार हुआ है, तब उससे बात कर उसके हृदय में करूणा और हित की भावना का क्रियात्मक सहयोग करें, तब हृदय कृपा के आनंद से भर उठेगा। मेरा अपना मत है कि मनुष्य को क्षमा और दया का भाव अपने पूरे जीवन तक अपनाने के साथ-साथ अन्य

लोगों से भी क्षमाशीलता की चर्चा करते रहना चाहिए। यदि हमारे में क्षमाशीलता और दया का भाव है तो कोई भी ताकत इस शब्द के ''ज्ञान के भंडारण को नहीं रोक सकती'' क्योंकि हम अपने ज्ञानेंद्रियों के द्वारा स्वंय विजय रथ के समान ज्ञान पाकर आगे बढ़ सकते हैं इसलिए कि समाज के विकास में क्षमा ही महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं ताकि इस शब्द के द्वारा भौतिक और सामाजिक संस्कार, दया, परोपकार, समाजसेवा, निष्काम कर्म की प्रेरणा, त्याग, बलिदान आदि सर्वगुणों का उदय अपने आप होता है, क्षमा शब्द अहम एवं सहज गुण हैं, यही शब्द समृद्धि और विकास का स्वरूप है। संयुक्त परिवारों में आज भी इस शब्द का अनुसरण करते हुए देखा जाता है। इसलिए कि संयुक्त परिवारों में सभी कार्य आत्मीयता और सहयोग के साथ होते हुए समस्याओं का समाधान करते हुए देशहित, पारिवारिक हित तथा समाजिक स्तर, नवयुवकों में, बच्चों में शुद्ध संस्कार के साथ-साथ अच्छी भावना के लिए क्षमा और दया का बीज सबके हृदय में अवश्य होता है ताकि जीवन में अच्छी प्रेरणा आने के साथ-साथ सकारात्क प्रभाव का पड़ना आवश्यक हो जाता है, इसलिए कि हमारा मन पवित्र और शुद्ध है। अत: किसी की गलती होने पर उसे क्षमा करने के लिए देर न लगाये, जब विचार वाणी शुद्ध है, सभी के प्रति क्षमा का भाव है तब क्षमा करने वाला व्यक्ति उसी प्रकार से प्रसन्न होता है जिस प्रकार से की गुरु जम्भेश्वर भगवान की शब्दवाणी पढ़ने से हृदय के अन्दर आनंद ही आनंद बरसता है ''क्षमा एक जादू है और दया एक कला है'' श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान समस्त प्राणियों को क्षमा और दया करने की सार्मथ्य दें।

गुरु जी की क्षमा करने की क्षमता अपार है, क्षमा करने की कोई सीमा नहीं हैं जब हम सबको मनुष्य जन्म मिला है तो फिर हम सब गुरू स्मरण में मुग्ध होकर उनके उन्नतीस नियमों का पालन करते हुए आध्यात्मिकता से भरी हुई भूमि पर रहकर सभी वर्ग के मनुष्य, स्त्री, बच्चे आदि लोग प्रतिदिन सच्चे मन से श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की स्तुति करें, स्तुति करने में मन लगे या न लगे इसकी परवाह कतई न करें, गुरु जी पर भरोसा रखें, अपने में प्रेम न होते हुए भी गुरुजी को तो प्रेम दया और गलती की क्षमा अप्रत्यक्ष रूप से करनी ही पड़ेगी वे हम सबकी पुकार अवश्य सुनते हैं। इसलिए कि वे अत्यंत कृपालु हैं। उनके क्षमा, दया के असीम आनंद में हम सब निमग्न रहें और इसी आनंद साधन का प्रचार करें, हम सभी लोगों को अपनी शक्ति के अनुसार हमेशा क्षमा और असीम दया धारण करते हुए मुग्ध रहना होगा कि क्षमा करते समय वाणी में कटुता न हों, यही क्षमा करने वाले का कर्तव्य होना चाहिए, इसलिए कि गुरु जी का कोई भी विधान कृपा से शून्य न होकर भीतरी स्वरूप सदा ही सरस मनोहर और मधुर हैं, जो सच्चे और त्यागी है वे तो दोनों ही रूप में कृतार्थ है।

क्षमा करने से रिक्तता, खालीपन, शून्यता, अवसाद, निराशा आदि से रिक्त होकर मन प्रफुल्लित होता है और क्षमा करके संपूर्णता का भी आभास होने लगता हैं, विश्नोई धर्म की महान श्रेष्ठता क्षमा है। प्रत्येक मानव को अपने जीवन में क्षमा कर देने की प्रवृति को अपनाना होगा ऐसी क्षमा करो जो कभी न भूले-

क्षमा का था भंडार श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के पास।
क्षमा की ध्वजा थी श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के साथ।।

❐ **श्रीमती आशा बिश्नोई**
वी-93, पटेल नगर, गाजियाबाद
(उत्तरप्रदेश)

अपील

'श्री पूल्हाजी महाराज का मंदिर' ग्राम रणीसर फलौदी जिला जोधपुर का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। पूल्हाजी की साथरी मात्र एक रणीसर में ही है, इसलिए समाज के हर व्यक्ति से इस कार्य हेतु अंशदान की अपेक्षा करते हैं। आप ट्रस्ट के खाता संख्या 31487353610 एसबीआई ब्रांच फलौदी में अंशदान जमा करा सकते हैं। मंदिर के जीर्णोद्धार की लागत लगभग डेढ करोड़ रूपए संभावित है। इस पुनीत कार्य हेतु आपका सहयोग अपेक्षित है। श्री पूल्हाजी महाराज के मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य विगत चार वर्षो से चालू हैं एवं अब तक इस कार्य पर राशि रू. 80.00 लाख का अनुमानित व्यय हो चुका है।

निवेदक

श्री पांचाराम मांझू, अध्यक्ष

श्री पूल्हाजी धर्मार्थ एवं परमार्थ ट्रस्ट, जोधपुर।(94144-98584)

पर्यावरण प्रहरी `नीम'

नीम जो कि संपूर्ण भारतवर्ष में पाया जाने वाला एक गुणकारी एवं औषधीय वृक्ष है। नीम का वृक्ष सदैव हरित एवं छायादार होता है। इसका तना मोटा एवं ऊंचा होता है। इसके तने से अनेक शाखाएं निकलती हैं एवं शाखाओं से टहनियां और टहनियों से अनगिनत पत्ते।

इस महान वृक्ष को अपने महत्वपूर्ण गुणों के कारण सदियों से ही अच्छी पहचान मिली। सबसे पहले नीम ने अपनी पहचान छाया एवं औषधी के रूप में बनाई और जैसे-जैसे समय बीतता गया इस महान वृक्ष की पहचान और भी बढ़ती गई, क्योंकि नीम से हमें छाया एवं औषधी के साथ-साथ इमारती लकड़ी, फल-फूल आदि प्राप्त होते हैं। नीम के इतने गुणकारी और महत्वपूर्ण होने के कारण एक विद्वान ने लिखा है कि:-

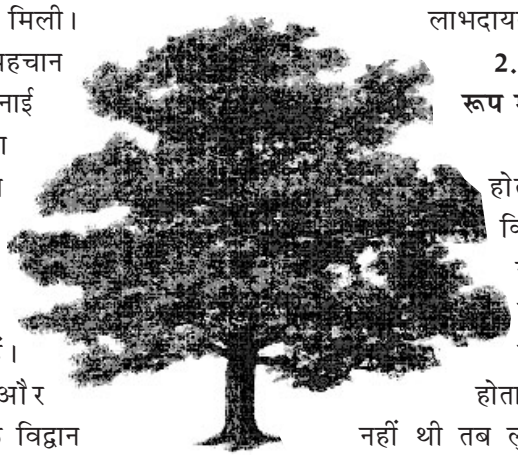

'महागुणकारी होता है नीम।
कहते डाक्टर वैद्य, हकीम।।
देखो नीम कितना ऊंचा और ऊपर से गोल।
जिस पर बैठ कोयल सुनाए अपने मीठे बोल।।'

आइए अब हम जानते हैं इस महान वृक्ष के गुण, महत्व और उपयोग को-

1. नीम का उपयोग औषधि के रूप में-

- जब किसी के शरीर पर फुंसियां हो जाती हैं तो नीम के पेड़ की छाल का लेप करने से फुंसियां ठीक हो जाती हैं।

-जब किसी के सिर में खपरा (सिर में सफेद पाउडर सा जमना) हो जाता है तो नीम के पत्तों को पानी में उबालकर फिर उस पानी को ठंडा करके छानकर नहाने से खपरा रोग समाप्त हो जाता है।

- जब दांतों में दर्द, सूजन आदि हो तो रोजाना नीम की दांतुन करने से दांतों का रोग समाप्त हो जाता है।

- नीम के पत्तों व छाल के पानी को चेहरे पर लगाकर नहाने से चेहरे पर निखार आ जाता है।

- हर रोज सुबह उठकर नीम के दो या तीन पत्ते खाने से शरीर तनाव मुक्त रहता है।

-नीम के कच्चे पत्ते खाने से बुखार गायब हो जाता है, ये खाने में कड़वे जरूर होते हैं, लेकिन लाभदायक होते हैं।

2. नीम का प्रयोग लकड़ी के रूप में-

नीम से इमरती लकड़ी प्राप्त होती है, जिसका प्रयोग लुहार, किसान, कारीगर इत्यादि करते हैं। नीम की लकड़ी काफी मजबूत एवं शक्तिशाली होती है। इसी कारण इसका उपयोग ज्यादातर होता है। पहले जब इतनी तकनीक नहीं थी तब लुहार, चरागाहे, राजा-महाराजा अपने रथों, बैलगाड़ियों के चक्के इसी पेड़ की लकड़ी से बनवाते थे। किसान हल, औजार आदि इसी पेड़ की लकड़ी से बनवाते हैं। वैद्य औषधियां, मसाला आदि कूटने के लिए नीम के घोटे का ही प्रयोग करते हैं।

3. त्यौहारों के अवसर पर नीम के वृक्ष का महत्व-

श्रावण के महीने में तीज के दिन इस वृक्ष के डालों पर झूले बांधे जाते हैं और बच्चे झूले झूलते हैं। भारतीय रीति-रिवाज के अनुसार तीज के दिन लड़कियों व महिलाओं के द्वारा झूला झूलते समय गीत भी गाए जाते हैं।

4. उद्योगों में नीम का प्रयोग

जब नीम के वृक्ष पर निंबोरिया लगती हैं और पकने के बाद वे जमीन पर गिर जाती हैं और उन्हें इकट्ठा करके उद्योगों में ले जाया जाता है। जहां पर निंबोरियों का तेल निकाला जाता है और शेष अवशेष से खाद एवं उर्वरक बनाया जाता है। तेल से साबुन, शैंपू एवं कीटनाशक दवाइयां बनाई जाती हैं।

5. पक्षियों का घर

नीम के वृक्ष से फल और फूल भी प्राप्त होते हैं। बसंत के महीने में इस वृक्ष पर छोटे-छोटे फूल लगते हैं और जब हवा चलती है तो इन फूलों की सुगंध दूर-दूर तक फैल जाती है। फूलों के बाद निंबोरी लगती है जो आरंभ में तो कच्ची होने के साथ खारी भी होती हैं और बाद में पककर मीठी हो जाती हैं, जिसे सब चाव से खाते हैं।

6. पक्षियों का घर-

नीम के वृक्ष को पक्षियों का घर माना जाता है। इस वृक्ष पर पक्षी अत्यधिक मात्रा में घोंसला बनाते हैं। जब बंसत महीने में इस पेड़ पर निंबोरी लगती है तो इसे खाने के लिए पक्षी दूर-दूर से चले आते हैं और घनी छाया देखकर इसी वृक्ष पर अपना घोंसला बना लेते हैं।

7. त्रि-वृक्ष या त्रिवेणी के रूप में

इस महान वृक्ष की गांव की मुख्य जगह या शहर के सरकारी संस्थानों पर जैसे अस्पताल, स्कूल या बस अड्डे आदि पर त्रि-वृक्ष या त्रिवेणी के रूप में लगाया जाता है। नीम के साथ बड़ और पीपल को लगाया जाता है। जब तीनों वृक्ष नीम, बड़ एवं पीपल एक स्थान पर त्रिभुज के रूप में उगाए जाएं, उसे ही त्रिवेणी कहते हैं।

8. किसानों के लिए उपयोगी

नीम के सूखे पत्ते जिसे किसान अपने खेत में खाद के रूप में प्रयोग करते हैं। नीम के पत्तों को उबालकर या कूटकर उस नीम के रस को पानी के साथ मिलाकर खेतों में छिड़कने से कीटनाशक मर जाते हैं, क्योंकि नीम कड़वा होता है।

9. मच्छरों से सुरक्षा-

जहां पर नीम का वृक्ष हो वहां पर मच्छरों का प्रवेश कम होता है, क्योंकि नीम का वृक्ष कड़वा होता है। अगर नीम के सूखे पत्तों को लाकर घर में पशुओं के पास धुंआ कर दिया जाए तो वे सारे मच्छर गायब हो जाएंगे।

ऊपर लिखी हुई पंक्तियों से आपको नीम के महत्त्व गुण एवं इसके उपयोग के बारे में पता चल गया होगा। अगर आज भी इस वृक्ष के महत्व को एक-दूसरे के माध्यम से बांटे तो इस वृक्ष की प्राचीन परंपरा दोबारा आधुनिक दुनिया में देखी जा सकती है।

❐ **जगत बिश्नोई** पुत्र श्री बालुराम बिश्नोई
गांव ढाबी खुर्द, डाकखाना जांडवाला बागड़,
तहसील भट्टू मंडी,
जिला फतेहाबाद (हरि.)

लेखकों से अनुरोध है कि.....

- आप अमर ज्योति के जन्माष्टमी विशेषांक हेतु अपना लेख 25 जुलाई, 2013 से पहले अमर ज्योति कार्यालय में भेजने की कृपा करें।
- जांभाणी सिद्धान्तों व विचारधारा का प्रसार-प्रचार ही इस पत्रिका का मूल उद्देश्य हैं। लेखक इसी उद्देश्य के आलोक में अधिकाधिक लिखकर भेजें।
- अपने लेखों में जंभवाणी के उद्धरण देते समय उसका मूल से मिलान अवश्य करें व कोष्ठक ( ) में सबद क्रम संख्या भी लिखें।
- विभिन्न संदर्भ ग्रंथों के उद्धरण देते समय भी कोष्ठक ( ) में उनका संदर्भ लिखें।
- विशेषांक हेतु भेजे जाने वाला लेख 1500 शब्दों (अमर ज्योति के तीन पृष्ठों) से अधिक न हो।
- विभिन्न जांभाणी मेलों, उत्सवों व सामाजिक गतिविधियों का विवरण भेजते समय ध्यान रखें कि आपकी सामग्री 10 तारीख तक पत्रिका कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए, क्योंकि पत्रिका 15 तारीख तक मुद्रण हेतु भेज दी जाती है।
- आप लेख टाईप करके भेजें तो अधिक अच्छा होगा, अन्यथा बांई ओर दो इंच का हाशिया छोड़कर साफ सुथरा लिखकर भेजें।
- अब आप अपने लेख फोंट AAText, Karuti Dev, Devnagri में टाईप करके ई-मेल पर भी भेज सकते हैं। पत्रिका का ई-मेल पता है- editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com
- लेखक लेख के साथ अपना पूरा पता, दूरभाष नं., यदि हो तो ईमेल पता भी आवश्यक रूप से लिखें।

-सम्पादक

निश्चय कायों बायों होयसी जे गुरु बिन खेल पसारी

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने प्रत्येक गृहस्थ बिश्नोई को योग्य विद्वान बिश्नोई साधु से ''गृहस्थ दीक्षा मंत्र (सुगरा मंत्र) ले करके सुगरा होने का विधान निश्चित किया था। इस सुगरा मंत्र के साधना करने का तरीका भी बतलाया गया है। यह गुरू मंत्र भी है। परम्परा से यह मंत्र साधु महात्मा जब सुगरा करते है तब सुनाते हैं। वे अपने शिष्यों को इसे याद रखते हुए इसकी साधना के अनुसार जीवन यापन करने की आज्ञा देते हैं। तब वह व्यक्ति सुगरा गुरूमुखी होता है। यह मंत्र श्रवण किये बिना तो नुगरा कहा जाता है। बालक जब 10 वर्ष का समझदार हो जाता है तभी से यह सुगरा संस्कार होता है। यह संस्कार योग्य बिश्नोई साधु ही करने का अधिकारी है। यही समय ऐसा होता है जब गुरू शिष्य बना करके उसे पवित्र जीवन जीने की कला सीखाते हैं। परंतु किन्हीं कारण वश बाद में (बड़ी उम्र) में श्री सचेत हो जाये तो भी उसी समय यह संस्कार प्रत्येक बिश्नोई को करवाना चाहिए। ऐसी हमारी वैदिक सनातन परम्परा भी है। इसका पालन करना प्रत्येक हिंदू का कर्तव्य है। इसलिए इस दिव्य शक्तिमान सुगरा मंत्र से कोई भी वंचित न रहे, यही जाम्भोजी की आज्ञा है। यदि उनकी इस आज्ञा का पालन नहीं करेगे और गुरु धारण करके सुगरा नहीं होंगे तो जाम्भो ने शब्द संख्या 42 में कहा है, ''**निश्चय कांयों बांयों होयसी जे गुरू बिन खेल पसारी**'' अर्थात् अपने आप ही मनहठ से पढ़े हुए मनहठ लोग मनमुखी हो करके अपने-अपने अभिमान (घमण्ड) के द्वारा रचे हुए खेलों को खेल रहे है। इनके लिए तो ये सब अपने स्वार्थ पूर्ति के खेल ही है। ये लोग (मनमुखी) मनचले अपने निजी स्वार्थो की पूर्ति नियमित रचे हुए खेलों में रस (आनंद) ले रहे हैं। परंतु दुनियां को तबाह कर रहे हैं। इनका यह कुतर्क भरा पाखंडवाद कब तक चलेगा। निश्चित ही भेद खुलेगा और दूध का दूध, पानी का पानी हो जायेगा। यदि गुरु धारण किये बिना मनमुखी हो करके ये नुगरे लोग इस प्रकार के लोगों को ठगने का खेल अपने पेट भराई हेतु खेलते रहेगें तो इनकी मनमुखी हो करके की गई साधनाएं निश्चय ही छिन्न-भिन्न हो जायेगी। अत: हम सभी गृहस्थ लोगों को अच्छे गुरु की शरण में जा करके गुरु दीक्षा ले करके गुरु की आज्ञानुसार साधना करनी चाहिए। जिससे सिद्धि मिल सके और मोक्ष की प्राप्ति हो सके। मनमुखी (नुगरे) रहने से इस जीवन का उद्धार (कल्याण) नहीं हो सकेगा। शब्द संख्या 30 में कहा है,'' **मनमुख दान ज्यूं दियो करणे आवागवण ज्यूं आयो गुरुमुख दान ज्यूं दिनों बिदरे सुर की सभा समाइयों**'' राजा कर्ण ने दान तो बहुत ज्यादा दिया था। परंतु गुरुधारण न करके मनमुखी(मनचला) हो करके अभिमान (घमण्ड) के सहित दान दिया था। जिसके कारण वह (कर्ण) मरने के बाद वापिस जन्म-मरण के चक्र में आ गया था। किंतु विदुर ने गुरुमुखी (सुगरा) हो करके दान दिया था।

गुरु धारण करके गुरु आज्ञा अनुसार जीवन बिताने के कारण विदुर मरने के बाद देव सभा में सुशोभित (सम्मानित) हो करके मोक्ष को प्राप्त हो गया था। शब्द संख्या 97 में कहा है। ''**गुरु बिन मुक्त जाई**'' हे नुगरे मनुष्यों! आप स्वयं भूल में पड़ करके अन्य लोगों को भुलावे में डालने हेतु आण देवताओं की पूजा करते हो और करवा रहे हो। ये तुम्हें नहीं करना चाहिए था। अब इनसे प्रेम छोड़ करके गुरु धारण करके गुरु की आज्ञा अनुसार जीवन जीने लग जाओं क्योंकि गुरु के बिना मुक्ति (मोक्ष) को प्राप्त नहीं हो सकोगे। शब्द संख्या-70 में कहा है, '' कोई गुरू पर ज्ञानी तोड़त मोहा तेरो मन रखवालों रे भाई'' अरे नुगरे लोगों। यदि तुम इन सांसारिक विघ्न बाधाओं से बचना चाहते हो तो किसी ज्ञानी साधु (गुरु) की शरण में जा करके गुरु दीक्षा ग्रहण करोगे तो वह गुरु अपने ज्ञान के द्वारा कृपा दृष्टि करके तुम्हारे मोह के बंधनों को तोड़ देगा। जब गुरु के ज्ञानाशीर्वाद से मोह का बंधन टूट जायेगा तब तुम्हारी जीवन रूपी खेती को चरने वाला चंचल मन भी इसी खेती का रक्षक हो जायेगा।

सत्संग व जागरणों में गायक कलाकार प्राय: में दोहे बोलते हैं

''जिसने सतगुरु किया नहीं ताका हिरदा है मलीन।
जन्म-जन्म के बीच में रहे दीन को दीन।।
''नुगरा माणस एक मत मिलों पापी मिलों हजार।
एक नुगरे रे शीश पर लख पापियन को भार।।

नुगरा(गुरुमंत्र से रहित) आदमी इतना अपवित्र है कि उसके द्वारा छूने, देखने, बोलने, उठने, बैठने मात्र से कोई स्थान, वस्तु व व्यक्ति अपवित्र (अशुद्ध) हो जाते हैं। उनका शुद्धिकरण गंगाजल, पाहल व साफ पानी का छिड़काव व धोने से या स्नान करने से होता है, ऐसा हमारे धर्म शास्त्र(ग्रंथो) का मत है।

❐ **मास्टर बुधराम जाणी**
सचिव, जाम्भाणी न्यात सुधार कमेटी जाम्भा-
जोधपुर(राज.)
मो. 8104671358

उत्तर प्रदेश विधानसभा में गूंजा बिश्नोइयों का पर्यावरण प्रेम

मा. अध्यक्ष जी, आपने मुझे वन जैसे महत्वपूर्ण विभाग के बजट की कटौती पर बोलने का मौका दिया। अभी हमारे एक काबिल दोस्त कह रहे थे कि एक वृक्ष हमारे 10 पुत्रों के समान है। एक वृक्ष हमको इतना देता है कि जो हमारे 10 पुत्र मिलकर भी जीवन में वो लाभ नहीं पहुंचा सकते। हमारे स्वास्थ्य की दृष्टि से वृक्षों की अवश्यकता है। मुझे तो गर्व है कि मैं ऐसे समाज से हूं, बिश्नोई समाज से कि जिसका नाम ही वनों और पेड़ों की रक्षा से जोड़ा जाता है। आज से 550 साल पहले जब कोई पर्यावरण और पेड़ों की रक्षा की बात नहीं करता तब गुरु जम्भेश्वर जी ने पेड़ों की रक्षा की बात कही थी। 363 बिश्नोइयों ने पेड़ से चिपक अपनी जान इसलिए दे दी थी कि उन्होंने पेड़ों को नहीं कटने दिया था। पेड़ों की रक्षा के लिए, पर्यावरण के संरक्षण के लिए उन्होंने कुल्हाड़े से कटकर अपनी जान दे दी थी और चिपकों आंदोलन के जन्म दाता बिश्नोई थे। इस पर मुझे बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ये मेरे लिए बड़े गर्व की बात है। आज राजस्थान और हरियाणा, राजस्थान जैसा रेगिस्तान जिसमें पेड़ नहीं पैदा हुआ करते थे और आज अगर वहां पर हरियाली दिखयी पड़ती है तो वो बिश्नोइयों की मेहनत का फल है। अभी आप सब लोगों ने दो तीन साल पहले सलमान खान जो एक बहुत बड़े फिल्म अभिनेता हैं, उनके द्वारा शिकार करने पर वहां के बिश्नोइयों ने जिस तरह से उनको घेरकर अदालत के जिम्मे किया और उनको जेल जाना पड़ा। ये भी वहां के बिश्नोइयों की पर्यावरण प्रेम की कहानी है। वन विभाग के बारे में मा. अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से मा. मंत्री जी से अनुरोध करना चाहूंगा कि वन विभाग के कार्य, लिखा पढ़ी में बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन वन विभाग की कार्य प्रणाली को सुधारने की आवश्यकता है। पेड़ बहुत लगाये जाते है। लेकिन उन पेड़ों की मेंटीनेंस नहीं होती, उनमें न तो लगाने के बाद पानी दिया जाता है। बरसात हो जाए और पेड़ चल जाएं तो अलग बात है उसके बाद विभाग के द्वारा उसकी कोई देख-रेख नहीं की जाती है। मा. अध्यक्ष जी, आवश्यकता इस बात की है कि उन अधिकारियों की जिन्होंने पेड़ लगवाये और गिनती करते हैं, कि हमने 50 हजार पेड़ लगाए, 1 लाख पेड़ लगवाए, उनकी जिम्मेदारी फिक्स की जाए, ज्यादा नहीं तो उनके द्वारा लगाए हुए पेड़ों के 50 प्रतिशत पेड़ जीवित रहने चाहिए नहीं तो उनकी ए. सी.आर. में लिखा जाए, जब तक वन विभाग इस तरह का प्रभावी प्रयास नहीं करेगा, तब तक वनों की संख्या और पेड़ो की रक्षा करने में हम लोग असफल रहेंगे और बहुत बड़े-बड़े प्रयास न करके मा. अध्यक्ष जी, हमें छोटे-छोटे प्रयास करने चाहिए। हम लोग लाखों-करोड़ों रूपया खर्च करके घर और बंगले बनवाते है। अपने घर के अंदर बहुत हरियाली करते है, लेकिन ऐसा कुछ नियम बना दीजिए कि अगर आप अपने घर के बाहर 10 पेड़ लगाएंगे, 5 पेड़ लगाएंगे, तो आपको इस तरह की प्रोत्साहन राशि दी जायेगी। किसानों को उनकी मेड़ों पर पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए और उसका मालिकाना हक उन्हीं किसानों को दे दिया जाए, जैसे कटौती का प्रस्वात रखते हुए मा.महावीर राणा जी ने हरियाणा का जिक्र किया। इस तरह की योजनाओं को उत्तर प्रदेश में भी लागू किया जाए।

यह भाषण कानपुर के विधायक श्री सलील बिश्नोई द्वारा उतरप्रदेश विधानसभा में दिया गया है। उल्लेखनीय है कि इस भाषण से प्रभावित होकर उतर प्रदेश सरकार ने पेड़ों एवं जीवों की रक्षा के लिए अनेक कदम उठाए हैं-सम्पादक

मा. अध्यक्ष जी, आपके माध्यम से जो सबसे महत्वपूर्ण बात मैं कहना चाहता हूं कि अभी 19, 20 जनवरी को इसी वर्ष 2013 में कानपुर के चिड़ियाघर में 31 काले हिरणों को , चिड़ियाघर के कर्मचारियों और कुत्तों ने मिलकर मार डाला। उन लापरवाह कर्मचारियों के ऊपर कोई कार्यवाही नहीं हुई, सिर्फ उन्हें निलंबित कर दिया गया है। महीने-प्रंद्रह दिन के बाद उन कर्मचारियों को फिर से बहाल कर दिया जायेगा। मान्यवर, जब वन विभाग की कार्य प्रणाली इस तरह की , जिसमें मा. मुख्यमंत्री ने स्वयं रूचि ली, जन्तु-उद्यान मंत्री स्वयं मौके पर गए, प्रमुख सचिव वन मौके पर गए और उसके बाद भी उस घटना को दबाने का प्रयास किया जा रहा है। मान्यवर, मेरा आपके माध्यम से अनुरोध है कि ऐसे दोषी अधिकारियों के खिलाफ एफ.आई.आर. करके , उनको जेल भेजा जाए, क्योंकि 31 मूक पशुओं की हत्या हुई है। जब हत्या का पता लगाने वहां वन सचिव गए तो वहां पर जो खुदाई कराई गयी तो जमीन के नीचे तमाम चीतल इत्यादि गड़े हुए पाए गए। जिनका कोई रिकार्ड नहीं था, चिड़ियाघर की गार्ड फाइल में और उसके बाद उसी एक हफ्ते के अंदर दो मगरमच्छ मर गए, चिड़ियाघर में हम 16 करोड़ की बाल रेल चलाने की बात कर रहे हैं, मा.मंत्री जी ने अपने बजट में 16 करोड़ की बाल रेल कानपुर के चिड़ियाघर में चलाने की बात की। माननीय बाल रेल तो तब चलाइये, जब चिड़ियाघर में जानवर ही नहीं बचेंगे, जीव-जंतु ही नहीं बचेगें जब चिड़ियाघर ही नहीं रहेगा तो बाल रेल चलाने का क्या फायदा है? पहले चिड़ियाघर के जीव-जंतुओं की सुरक्षा की व्यवस्था की जाए फिर उसके आधुनिकीकरण की व्यवस्था की जाए। आपने बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत आभरी हूं।

प्रतिस्मृति

गुरु वाणी में पर्यावरण संरक्षण

भारत में पन्द्रहवीं शताब्दी में हुए पर्यावरण संरक्षण के अग्रदूत एवं बिश्नोई समाज के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर महाराज ने आज से 528 वर्ष पूर्व पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले खतरों को पहचान लिया था और उनसे बचने के लिए उपाय भी लोगों को सुझा दिए थे। इस संदर्भ में उनके धर्म नियमों से उद्धृत दो पंक्तियां है :-

' पाणी, वाणी, ईधंणी इनको लीजै छाण'

' जीव दया पालणी, रूंख लीलो नही घावै'

आज समस्त विश्व इन्हीं पांच बातों पर ना चलने की वजह से दुखी है और विनाश के कागार पर है। भारत सहित समस्त विश्व में आज लगभग 70 प्रतिशत आबादी पर्यावरण प्रदूषण की चपेट में है। जीवधारियों को सुगमता में सांस लेने में भी कठिनाई हो रही है। इन हालात में यदि पर्यावरण प्रदूषण को रोका नहीं गया तो भविष्य में प्राणियों का विनाश निश्चित है।

गुरु महाराज के कथनानुसार पानी को छाण करके फिल्टर करके प्रयोग ना करने से अनेक प्रकार की बिमारियां प्राणी शरीर में प्रवेश कर गई हैं और वायु मण्डल को दूषित कर प्रदूषण फैला रही है। अत: पानी साफ, स्वच्छ व छान कर प्रयोग करें।

वाणी के बारे में भी यही बात है, 'पहले तोलो फिर बोलो'। इसी को वाणी छानना कहा गया है। यदि आप मधुर और नम्र वाणी बोलेंगे तो सबको प्रिय लगेगी और किसी को कोई कष्ट या दुख नहीं होगा तथा ना ही कोई झगड़ा-फसाद होगा। जब कोई झगड़ा-फसाद अथवा मारकाट नहीं होगी तो वातावरण स्वच्छ और शुद्ध रहेगा।

ईंधणी-इस शब्द में सभी प्रकार के ईंधन आते हैं। जैसे लकड़ी, कोयला, उपले, मिट्टी का तेल, डीजल ,पैट्रोल और गैस आदि। इनको छानने का तात्पर्य है कि इन्हें साफ व मिलावट-रहित ही प्रयोग करना चाहिए। आज जितना प्रदूषण वायुमण्डल में फैला है, वह खराब एवं मिलावटी ईंधन के प्रयोग के कारण से ही है। फैक्टरियां और हर प्रकार के वाहन जो धुआं फैंकते हैं, वह अशुद्ध ईंधन का ही नतीजा है।

जीव दया पालनी- गुरु जम्भेश्वर महाराज ने वन्य जीव प्राणियों पर दया करने की बात कही है। स्पष्ट है कि जब जीवों पर दया की जायेगी और उनका वध नही होगा तो प्रकृति संतुलन बना रहेगा और कहीं कोई प्रदूषण फैलने की गुजांइश नही रहेगी। सभी प्राणी आराम से सुखपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

रूंख लीलो नही घावै -अर्थात् हरे वृक्षों को न काटा जाए। गुरु जम्भेश्वर महाराज ने पर्यावरण-संरक्षण और प्राणी मात्र के कल्याण के लिए हरे वृक्ष को काटने से मना किया है, क्योंकि पेड़ -पौधे हर जीवधारी को प्राणवायु आक्सीजन प्रदान करते है, जिससे वे स्वस्थ तथा निरोग रहते हैं और लम्बी आयु प्राप्त करते हैं।

आज समय की सबसे बड़ी मांग है कि हर मानव, जहां भी हो, पेड़ लगाएं यदि हमें पर्यावरण प्रदूषण से बचना है तो।

❐ सहीराम जौहर

संस्थापक संपादक-अमर ज्योति, हिसार

1.6.2008

कामरेड सहीराम जौहर 'प्रभाकर' जून,1950 में 'अमर-ज्योति' के प्रथम सम्पादक बने। 27 अक्तूबर, 2008 को 86 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। बिश्नोई समाज में व्याप्त कुरुतियों जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, मृत्यु-भोज, अदले-बदले के विवाह,नशाखोरी तथा अशिक्षा के विरुद्ध लोगों को 'अमर-ज्योति' में लिखे अपने सम्पादकीय एवं लेखों के माध्यम से जीवन भर जागृत किया। अपनी मृत्यु से मात्र 4 महीने, 26 दिनों पहले 1 जून2008 को 'विश्व पर्यावरण दिवस- 2008' हेतु लिखा गया उनका यह आलेख सुधी पाठकों के सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। **-सम्पादक**

अनुकरणीय

आज के समय में जहां शादियों में केवल दहेज व धन का बोलबाला रहता है तथा दहेज रूपी दानव विकराल रूप धारण करता जा रहा है। वहीं कुछ सज्जन ऐसे भी हैं जिनके लिए दहेज कोई महत्व नहीं रखता। ऐसा ही एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है श्री राजाराम बैनीवाल निवासी गांव सारंगपुर जिला, हिसार ने। आपने अपने पुत्र अमित की शादी में केवल एक रूपए का दहेज स्वीकार किया। अमित का विवाह गांव भाणा जिला हिसार के निवासी श्री कृष्ण खिचड़ की सुपुत्री ममता रानी से 11 मई 2013 को सम्पन्न हुआ। निश्चय ही यह एक अनुकरणीय व प्रशंसनीय कार्य है।

जन्माष्टमी विशेषांक के लिए विज्ञापन हेतु सूचना

आपको सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि बिश्नोई सभा, हिसार ने अमर ज्योति के लाखों पाठकों की हार्दिक इच्छा व न्यायोचित मांग का सम्मान करते हुए अमर ज्योति का जन्माष्टमी विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। यह भव्य विशेषांक गुरु जम्भेश्वर भगवान के जन्मोत्सव (जन्माष्टमी) के उपलक्ष में प्रकाशित होगा, जो अगस्त-सितम्बर, 2013 का संयुक्त अंक होगा। सामाजिक, पर्यावरण व आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी समाज की अति लोकप्रिय व विख्यात पत्रिका अमर ज्योति की प्रसार संख्या आठ हजार से भी अधिक है व पाठकों की संख्या एक लाख के लगभग है। अपनी निष्पक्षता, उपयोगिता व स्तरीय प्रकाशन सामग्री व रूचिकर आवरण के कारण इस पत्रिका ने राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश सहित पूरे भारत में ही नहीं अपितु नेपाल, इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों के पाठकों के हृदय में भी अपना आदरणीय स्थान बनाया है। आपको ज्ञात ही है कि इस पत्रिका का जब भी विशेषांक प्रकाशित होता है तो वह अपनी ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ-साथ अपने मनभावन व सचित्र आवरण के कारण पाठकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बनता है। आज व्यवसाय व महंगाई के युग में भी बिश्नोई सभा, हिसार इस पत्रिका को समाज हितार्थ लागत से भी कम मूल्य (मात्र 70 रूपए वार्षिक) में प्रकाशित कर रही है। इसके विशेषांक के प्रकाशन का श्रेय सदैव से ही आप जैसे विज्ञापनदाताओं को रहा है। आगामी विशेषांक में भी अमर ज्योति ने कुछ पृष्ठ विज्ञापन हेतु सुरक्षित करके विज्ञापन दाताओं को एक सुनहरा अवसर दिया है, जिसका सदुपयोग करके वे लाखों पाठकों के हृदय में अपनी गहरी पैठ बना सकते हैं। पत्रिका ने इस वर्ष विज्ञापन दाताओं की पुरजोर मांग का समर्थन करते हुए विज्ञापन रंगीन पृष्ठों पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। नि:संदेह इससे विशेषांक की भव्यता को चार चांद लगेंगे।

अत: जो समाजसेवी, उद्यमी व व्यवसायी बंधु अपनी इस चहेती पत्रिका को विज्ञापन के माध्यम से सहयोग देना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपना विज्ञापन व निर्धारित धन राशि 25 जुलाई, 2013 तक अमर ज्योति कार्यालय, बिश्नोई मंदिर हिसार में भेज दें। आपके सूचनार्थ-

- ❖ विज्ञापन के पृष्ठ सीमित हैं, इसलिए पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर ही विज्ञापन स्वीकृत किए जाएंगे।
- ❖ विज्ञापन केवल पत्रिका के अंदर के पृष्ठों में ही प्रकाशित होंगे।
- ❖ बिश्नोई धर्म व जांभाणी विचारधारा के प्रतिकूल विज्ञापन स्वीकृत नहीं किए जाएंगे।
- ❖ विज्ञापन की निर्धारित धनराशि का ड्राफ्ट व्यवस्थापक, अमर ज्योति हिसार के नाम भेजें।
- ❖ हो सके तो विज्ञापन सामग्री सी.डी. में या e-mail से भेजें। e-mail पता है- editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com
- ❖ अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- मो. : 8295703437, 01662-225804

विज्ञापन दरें:-	
पूरा पृष्ठ	**7000 रूपए**
आधा पृष्ठ	**4000 रूपए**
चौथाई पृष्ठ	**2500 रूपए**

अमर ज्योति का यांत्रिक विवरण	
मुद्रित पृष्ठ का आकार	**$7^{1/4}$'' x 9''**
कॉलम	**2**

आपके शुभाकांक्षी :

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई
संपादक, अमर ज्योति
मो. : 98121-08255

❒ सुभाष देहडू
प्रकाशक व मुद्रक, अमर ज्योति
प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार
मो. : 99960-01929

''भ्रूण हत्या और दहेज''

ऐ मां तूने ये क्या किया,
मुझे संसार में आने से पहले ही मार दिया।
मार दिया तूने मुझे मन ही मन,
क्या नहीं था तेरे पास दो गज कफन।।
तूने मुझे जन्म दिया होता, जरा सी सृष्टि दिखाई होती,
मैंने भी रंगीन जीवन देखा होता,
चाहे छोड़ आती तू मुझे अनाथ आश्रम,
मैं वहां कच्चे दिलवालों की तरह न होती
मैं तूझे अकेला ना छोड़ती तेरी तरह
अगर तूने दी होती मुझे इस जहां में पनाह
तुझे नहीं मालूम की जिस घर में लड़की का सम्मान होता है
ऐ मां उस घर में भगवान का निवास होता है
ऐ लोगों दुनिया से बचने के लिए चाहे इस
जहां में खुद मरो, लेकिन लड़की होने के डर से
भ्रूण हत्या कभी मत करो।।

हम सभी ने भ्रूण हत्या के बारे में बहुत कुछ सुन रखा है और इसके बुरे परिणामों के बारे में अच्छी तरह से परिचित हैं, परन्तु फिर भी यह जुर्म रूकने का नाम नहीं ले रहा है। आज मां-बाप लड़की का जन्म होते ही उसके दहेज की तैयारियां शुरू कर देते हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है कि एक लड़की के बजाय उसके दहेज को महत्व दिया जाता है। हम सभी चर्चा कर लेते हैं और दुख प्रकट करते हैं जब कोई भ्रूण हत्या का समाचार सुनते या पढ़ते हैं, लेकिन कभी सोचने की कोशिश नहीं करते कि एक मां ने इतना बड़ा कदम किस डर से उठा लिया? क्या उसे अपनी बेटी प्यारी नहीं थी? उसे थी, उसे डर था उस समय का जब लोग अपने बेटे की बोली लगाएंगे और वो उसे पूरा नहीं कर सकेंगे। आज दहेज के लिए कितनी शादियां टूटती हैं, कितनी औरतें शादी के बाद दहेज के लिए प्रताड़ित की जाती हैं। कही न कहीं इन सबके लिए हम जिम्मेवार हैं। धन, दौलत, सोना हमें अंधा बना देता है। लोग अपनी बेटी को दहेज देकर अपने ठाट-बाट दिखाने की कोशिश करते हैं, लेकिन वो भूल जाते हैं कि ऐसा करके वो समाज और नैतिकता को चोट पहुंचा रहे हैं। मैं यह नहीं कहती की अपनी बेटी को कुछ देना गलत है, लेकिन किसी की मांग को पूरा करना गलत है। जल्दी शादी न करें, मैं सभी को कहना चाहूंगी कि लड़की की शादी के बजाए उसकी शिक्षा को महत्व देना चाहिए, क्योंकि लड़की के हाथ में दो परिवारों की इज्जत होती है। अच्छी शिक्षा ही दो परिवारों का भविष्य संवारती है। आज लड़कियों की संख्या में आ रही कमी सरकार के बनाए नियम और कानून काम नहीं करेंगे, बल्कि हमारे मिले-जुले प्रयास इस कुरीति को दूर कर सकते हैं। 'हम बदलेंगे तो जग बदलेगा।'

❐ **एकता सहारण**
M.Sc.(Ch.), संगरिया, हनुमानगढ़ (राज.)

सूचना

जाम्भाणी साहित्य के पुराने प्रकाशन की पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो रही थी तो समाज को उपलब्ध करवाने के लिए जाम्भाणी साहित्य सस्ता प्रकाशन माला के तहत अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने अब तक आठ पुस्तकों का प्रकाशन करवा दिया है। जिनका ब्यौरा इस प्रकार है:-

1. सद्गुरु जाम्भो जी (मूल्य 10 रूपए)-संग्राहक-ताराचंद खिचड़
2. जाम्भाणी साखी संग्रह, (मूल्य 30 रूपए)- संग्राहक - ताराचन्द खिचड़
3. शब्दवाणी बड़ा साईज (मूल्य 30 रूपए)-संग्राहक - ताराचन्द खिचड़
4. शब्दवाणी मध्यम साईज (मूल्य 20 रूपए)-संग्राहक - ताराचन्द खिचड़
5. शब्द वाणी पाकेट साईज (मूल्य 10 रूपए)-संग्राहक - ताराचन्द खिचड़
6. जम्भ सागर (मूल्य 100 रूपए)-स्वामी कृष्णानंद आचार्य
7. जाम्भा पुराण (मूल्य 125 रूपए)- स्वामी कृष्णानंद आचार्य
8. जम्भदेव चरित्र भानू व बिश्नोई धर्म विवेक (मूल्य 40 रूपए)- लेखक स्वामी ब्रह्मानंद जी

इसके अतिरिक्त बिश्नोई सभा, हिसार द्वारा प्रकाशित दुर्लभ साहित्य जम्भ सागर का फिर से प्रकाशन करवाया जा रहा है। उपर्युक्त सभी पुस्तकें कार्यालय- अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम, बिश्नाई सभा, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा में उपलब्ध हैं।

❐ **मनोहर लाल गोदारा, सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार**

नारी की स्थिति

हमारे समाज में नारी की स्थिति बहुत ही शोचनीय बनी हुई है क्योंकि अब हर जगह नजर उठा कर देखा जाए तो नारी पर ही हो रहे जुल्म सामने आते हैं। आज की नारी को एक तरफ तो सभी अधिकार दे रखे हैं और दूसरी तरफ जुल्मों के नीचे दबा रखा है। सभी को पता है कि नारी के बिना यह सृष्टि अधूरी है फिर भी लोग नारी के महत्व की तरफ ध्यान नहीं देते और उन नन्हीं-नन्हीं जानों को जन्म होने से पहले ही मरवा देते है और फिर चाहते है अपने लाड़ले बेटों के लिए बहुएं?

जो लोग नारी पर जुल्म करते हैं उनके डर से ही लोग बेटियां पैदा करने से डरते हैं। वे यह नहीं चाहते कि जो आज समाज में एक औरत मां, बेटी तथा बहन के साथ हो रहा है वो कल को हमारी बेटी के साथ न हो इसी डर से ही कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथा प्रचलित हो गई है।

क्यों किए जाते है औरत पर ये जुल्म? जब ऐसी बातें सुनने को मिलती है तो दिल पसीज जाता है। क्या लोगों को पता नहीं कि एक औरत कितने रूपों में अपने अलग-अलग फर्ज निभाती है जब जन्म होता है तो वह एक बेटी तथा बहन के रूप में अपना फर्ज निभाती है तथा अपने माता-पिता और परिवार तथा समाज का नाम रोशन करती है। फिर जब वह विवाह करके अपने पति के घर जाती है तो वहां पर भी अपना धर्म निभाती है और अपने माता-पिता का नाम रोशन करती है।

''बेटे अपने एक कुल का नाम रोशन करते है।
पर दो-दो कुलों की लाज होती है बेटियां।''

हमे पता है कि नारी कितने रूपों में सामने आती है जैसे कभी सती बनकर तथा कभी सावित्री बनकर और कभी कल्पना चावला, सुनीता विलियम, सानिया मिर्जा, किरण बेदी, इंद्रा गांधी के रूप में हमारे सामने आती है और हमारे समाज का नाम रोशन करती है। जब वह पत्नी के रूप में आकर वह अपना पति व्रता धर्म पूरे मन से निभाती है फिर भी यह दहेज का लालची समाज उसको दहेज के लिए तेल छिड़क कर जला कर मार देता है, नारी जननी के रूप में अपना कर्तव्य निभाती है तथा सभी को प्रेम का सार सिखाती है। लेकिन यह निर्दयी समाज उस को पिट-पिट कर मार देता है। ऐसा क्यों किया जाता है नारी पर अत्याचार क्यों..? लेकिन फिर भी खेलों में चार चांद लगाती है और अपने देश, समाज तथा परिवार का नाम रोशन करती है। वह परिवार की सुंदरता बढ़ाती है। खेतों में भी हाथ बंटाती है और समाज को अंधकार से रोशनी की ओर ले जाती है तथा हमारे समाज की नींव को मजबूत बनाती है। लेकिन फिर भी नारी को सिर्फ भोग की वस्तु ही माना जाता है और उसको इस तरह से दबा कर रखा जाता है, इसलिए तो आज की नारी घुट-घुट कर जीने को मजबूर है, क्यों नहीं सोचता कोई नारी की इस स्थिति के बारे में?

अब जब ये अपहरण जैसे मामले सामने आ रहे हैं, तो क्यों नारी पर और रूकावटें तथा पाबंदियां लगाई जा रही है? यदि यह समाज सिर्फ नारी को ही दबा कर इन सभी अपराधों को रोकना चाहेगा तो यह बिल्कुल भी नही रूकेगा और यह सही भी नही होगा। दिल्ली के गैंगरेप मामले के बाद लड़कियों के कपड़ों पर तथा पर्सनल फोन पर पाबंदी लगा कर यदि सरकार इन गुनाहों या अपराधों को रोकना चाहती है तो नही रोक सकेगी क्योंकि यह सही तरीका नहीं है क्योकि हर किसी को लगता है कि सिर्फ फोन का गलत प्रयोग होता है पर नही हमें इसके फायदे देखने चाहिए। जहां सरकार औरतों पर पाबंदियां लगा कर इसका समाधान कर रही है यह तरीका उचित नहीं है। सरकार को चाहिए की वह औरतों पर पाबंदी लगाने की बजाए उनको जागरूक करें कि वह अपनी रक्षा किस प्रकार करें और उनको आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि वह अपने पर होने वाले अपराधों के विरूद्ध आवाज उठा सकें। इसमें सरकार को चाहिए की वह औरत का इन अपराधों से बचने के अभियान में साथ दें।

मैं नारी की शक्ति के बारे में कुछ पक्तियां कहना चाहती हूं।--नारी की शक्ति में समताओं की भक्ति है। आंधी से तिनके समेट आसियां बना लेती है, हवांए कितनी भी तेज हो दीया (दीपक) जला लेती है। यही नारी की शक्ति है, यही नारी की शक्ति है।

❐ **टुरना बिश्नोई सुपुत्री श्री निर्मल कुमार खीचड़**
गांव बिश्नपुरा तहसील अबोहर
जिला फाजिल्का, पंजाब (मो.: 9779361369)

बधाई संदेश

कैप्टन शिल्पी बिश्नोई सुपुत्री कैप्टन कमल बिश्नोई, निवासी फतेहपुर जोतांवाली, जिला सिरसा (हरि.) की नियुक्ति व्यवसायी विमानचालक (Commercial Pilot) के पद पर हुई है। वर्तमान में आपने जेट एयर क्राफ्ट, बैंगलोर (कर्नाटक) में कार्यभार ग्रहण किया है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी पर हार्दिक बधाई तथा उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

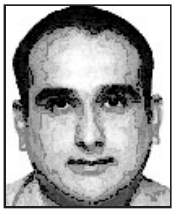

डॉ. रामनिवास बिश्नोई (M.S. Ortho) सुपुत्र श्री सुखराम जी पंवार निवासी गांव नोसर, तहसील ओसियां, जिला जोधपुर (राज.) का चयन राजस्थान लोकसेवा आयोग द्वारा सहायक प्रोफेसर (Orthopedics) के पद पर हुआ है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी पर हार्दिक बधाई।

डॉ. (श्रीमती) इन्द्रा बिश्नोई धर्मपत्नी श्री देवेन्द्र कुमार भादू आर.पी.एस. सुपुत्री श्री लादूराम बिश्नोई, पूर्व सलाहकार मुख्यमंत्री राजस्थान ने महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर से 'गुरु जम्भेश्वर के पर्यावरण चिंतन पर वैदिक पर्यावरण चिंतन का प्रभाव और उसकी वर्तमान प्रासंगिकता' विषय पर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। वर्तमान में आप राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर में दर्शनशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी पर हार्दिक बधाई।

संदीप कुमार सुपुत्र श्री बलबीर सिंह लोयल निवासी गांव सीसवाल, तह. आदमपुर, जिला हिसार (हरि.) ने आई.सी. ए. आई. से चार्टर्ड अकाउंटेंट (Chartered Accountant) की परीक्षा उत्तीर्ण की है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी पर हार्दिक बधाई।

श्रीमती सुषमा देवी धर्मपत्नी श्री समुन्द्र सिंह एडवोकेट, निवासी गांव बीघड़, जिला फतेहाबाद (हरि.) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) संस्कृत विषय में उत्तीर्ण की है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी पर हार्दिक बधाई।

राजाराम बिश्नोई सुपुत्र श्री हेतराम गोदारा निवासी गांव भागसर, तहसील पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़ (राज.) का चयन कर्मचारी चयन आयोग द्वारा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) के अधीन लेखा परीक्षक (Auditor) के पद पर हुआ है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से आपकी इस उल्लेखनीय उपलब्धी पर हार्दिक बधाई।

चौमुखा दीपक का महत्व

जाम्भाणी पंथ, प्रहलाद पंथ अर्थात् बिश्नोई पंथ में जागरण आदि अवसरों में चौमुखा दीपक जलाया जाता है। यह विशेष परंपरा बिश्नोई पंथ में ही है इस चौमुखा दीपक का विशेष रहस्य इसमें छुपा हुआ है। चौमुखा दीपक का मतलब यह होता है कि यह श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का ही स्वरूप है क्योंकि जम्भेश्वर भगवान के चारों तरफ मुखारविन्द की ज्योति ही दृष्टिगोचर होती थी अर्थात् चारों तरफ मुख ही दिखाई देते थे। शिष्य-भक्त भी श्री देवजी के चारों तरफ बैठते थे तो वे श्री देवजी को अपने सामने ही बैठे देखते थे। उनके पेट-पीठ अदृश्य थे। उसी परंपरा के अनुसार ही एवं श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का स्वरूप मानते हुऐ चौमुखा दीपक जलाया जाता है एवं मन्दिर भी इसी परंपरा का अनुसरण करते हुऐ चौमुख ही बनाये जाते है अर्थात् चारों तरफ दरवाजे रखे जाते हैं। यह प्राचीन मन्दिरों में देखा जा सकता है। चौमुख के सन्दर्भ में शब्दवाणी में भी कहा गया है-

प्रसंग-''उधरण कान्हावत यूं कह्यो ,देवजी किसो आचार।
पेट पीठ दीसे नहीं ,ताका करो विचार।।''

जोधपुर नरेश जोधाजी के भाई कान्हाजी के पुत्र उधाजी ने पूछा कि हे देव! मैं काफी देर से अपलक दृष्टि से आपकी तरफ देख रहा हूं ,आपके पेट-पीठ दिखाई नहीं दे रहे है अर्थात् आपके चारों तरफ मुखारविन्द की ज्योति ही दृष्टिगोचर हो रही है, इसमें क्या रहस्य है।

श्री जम्भेश्वर जी **शब्द नं. 2** के माध्यम से उनकी शंका का समाधान करते हुऐ कहते हैं कि-

ओ३म् मोरे छाया न माया.....निज बाला ब्रह्मचारी।।

इस शब्द के माध्यम से गुरु देवजी बतलाते हुए कहते है कि मेरे शुद्ध स्वरूप में माया एवं छाया नहीं है यह मेरा शरीर लोही ,रक्त ,मांस ,धातु आदि से नहीं बना है न ही मेरे कोई मां-बाप ही है। मैं तो स्वयं अपने आप में ही स्थित हूं। मुझे किसी सहारे की जरूरत नहीं है। इस प्रकार आत्मा-परमात्मा में अभेद प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि इस सृष्टि की रचना करने वाला मैं हूं तथा मेरी रचना करने वाला कोई नहीं है। यह मेरा शरीर पंच तत्त्व से बना हुआ नहीं है तथा इस विषय में **शब्द नं. 94** में कहा है-

''ना मेरे मायन ना मेरे बापन,
मैं अपनी काया आप संवारी।।''

अर्थात् मेरे कोई माता-पिता नहीं है मैनें अपनी काया की सृजना स्वयं ने ही की है तथा प्रकृति को अपने वशीभूत करके काया को स्वयं ने बनायी है। प्रकृति मेरे अधीन है, मैं प्रकृति के अधीन नहीं हूं।

चौमुख के विषय में आरती में भी कहा है-

''चौथी आरती चहुं दिश परसै,
पेट पूठ नहीं सन्मुख दरसै।''

अर्थात् श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के चारों तरफ मुख ही दिखाई देते थे ,पेट-पीठ अदृश्य थे। उसी परंपरा के अनुसार चलते हुए आज भी जागरण, सत्संग आदि में चौमुख दीपक जलाया जाता है वह इसी बात का प्रतीक है।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान नें लोगों को सचेत करते हुए **शब्द नं. 114** में भी कहा है-

ओ३म् सुरनर तणों संदेशो आयो ,सांभलियो रे जाटो।
चांदणे थकै अंधेरे क्यों चालो ,भूल गया गुरु वाटो।।''

श्री देवजी कहते है कि मैं देव मानव के रूप में यहां आकर आपको यह संदेश दे रहा हूं अर्थात् आपसे वार्तालाप करने के लिये ही यह मानव शरीर धारण किया है यह निमित मात्र है परन्तु यह कार्य तो निराकार निरंजन स्वयं ब्रह्मा का ही है। परन्तु निराकार होने के कारण कोई कार्य नहीं कर सकते इसलिये मानव शरीर धारण किया है।

उपर्युक्त विषय के अनुसार इसका यह अर्थ है कि चौमुख दीपक की ज्योति को ही भगवान विष्णु का रूप मानकर इसको विशेष महत्व देते है तथा यही पूर्ण विश्वास मानते है कि श्री गुरु जभेश्वर भगवान स्वयं हमारे बीच में विराजमान हैं। इसी आधार पर चौमुख दीपक का महत्व है तथा यह सत्य भी है क्योंकि जब लालासर की साथरी में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के अन्तर्ध्यान होने का समय हुआ तब शिष्यों ने कहा कि हे गुरुदेव! आप हमें छोड़कर जा रहे हो। हम आपके बिना कैसे रह सकेंगे। तब श्री देवजी इसका समाधान करते हुए कहते हैं कि सुनो! मेरा दर्शन ज्योति में संभव है अर्थात् हवन करना तथा वार्तालाप करने के लिये शब्दवाणी है। इन दोनों का पूर्ण रूपेण ध्यान रखना, मैं कहीं नहीं जा रहा हूं आपके पास ही रहूंगा तथा मेरा अडिग आसन सम्भराथल पर है। इस प्रकार हवन और शब्दवाणी का विशेष महत्व श्री देवजी ने बताया है तथा

'' लालासर की साथरी पहुंच कियो प्रयाण।
इल मांही अंधियारो हुयो ,ज्यूं भूमि बरत्यो भाण।।''

विक्रम संवत् 1593 मिंगसर वदी नवमी के दिन लालासर की साथरी में अपनें योग बल से अन्तर्ध्यान हो गये। तथा अपना आसन इस प्रकार बताया है-

''जां जां पवन आसण पाणी आसण,
चन्द आसण सूर आसण।
गुरु आसण सम्भराथले, कहै सतगुरू भूल मत
जाइयो, पड़ौला अभै दोजखै।। शब्द 90।।''

❑ **हरिनारायण बिश्नोई**
ग्राम रोड़ा, त. नोखा, जिला बीकानेर, (राज.)

बिश्नोई धर्मः सर्वश्रेष्ठ धर्म

भारत विभिन्न धर्मो, मजहबों, जातियों और सम्प्रदायों का देश है। इस देश का प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी धर्म से अवश्य ही संबंध रखता है। निमयबद्ध संयमित और सात्विक जीवन ही धार्मिक जीवन है। यह व्यक्ति के आचरण और व्यवहार की एक संहिता है। धर्म शब्द : धृत' धारण धातु के आगे मन प्रत्यय लगने पर निष्पन्न होता है इसकी व्युत्पति तीन प्रकार से हो सकती है-

ध्रियते लोक : अनेन इति।
''धरति धारयति वा लौकम्।''
ध्रियते यःसःधर्मःइति।

प्रथम जिससे लोकधारण किया जाय, वह धर्म है। द्वितीय - जो लोक धारण करें वह धर्म हैं । तृतीय जो दूसरों से धारण करे वह धर्म है। मनुस्मृति में भी धर्म की बहुत ही सुंदर परिभाषा है-

''वेदःस्मृति सदाचार स्वस्थ च प्रियात्मनः।
एतद् चतुर्विधं प्राहु साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्।। (मनुस्मृति)

वेद स्मृति सदाचार और अपनी आत्मा की प्रसन्नता ये चारों धर्म के परिचालक है। विभिन्न धार्मिक ग्रंथो में धर्म की भिन्न -भिन्न परिभाषाएं दी गई है।

इन सभी धर्मो की एक सारामृत नियमावली श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज ने 15वीं शताब्दी में प्रदान की वह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत ही प्रासंगिक है। उनतीस नियमों में प्रत्येक नियम विवेच्य और आत्मसात् करने योग्य है।

गुरु महाराज ने कहा था जो बीस और नौ उनतीस नियमों का पालन करेगा वही 'बिश्नोई' होगा। परंतु आज यह परिभाषा बदल दी गई है। अब तो 'बिश्नोई' कुल में जन्म ग्रहण कर लिया और बन गए 'बिश्नोई-। अब 'बिश्नोई' एक उपाधि मात्र बनकर रह गयी है। आज जम्भेश्वर जी के आदर्शो, शिक्षाओं नियमों का जिस तरह निरादर हो रहा है उसे देखकर हृदय व्यथित हो जाता है। जम्भेश्वर जी ने जो खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार की शिक्षा प्रदान की थी, उसे समाज के लोगों ने भूला दिया है।

अब तो बहुतों ने भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करना ही छोड़ दिया है और तामसिक पदार्थ खाने से भी परहेज नहीं कर रहे है। 'मदिरा' जो पांच महापापों में से एक है इसको जैसे राष्ट्रीय पेय बनाने की ठान ली है।

इतना ही नहीं आश्चर्य की सीमा तो तब पार कर जाती है जब प्रबुद्ध वर्ग जिसका शिक्षा के कारण तीसरा नेत्र खुल गया है ऐसे सहजादे क्षणिक आवेश के कारण सामाजिक मर्यादाओं को तोड़कर कुल के बाहर संबंध स्थापित करने में परहेज नहीं करते। माता-पिता के हजारों अरमानों, सपनों और आकांक्षाओं को मिट्टी में मिला देते है और हां! ऐसा अन्य पंथो में कौन सा सबल पक्ष है जो हमारे धर्म में नहीं है जिस कारण से अपने समाज के लोग इतने आकर्षित हो रहे हैं।

अपने धर्म से बढ़कर दूसरा कोई धर्म नहीं होता है, इसी बात को गीता में भी कहा गया है-

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। (गीता 3-35)

अर्थात् अपने नियतकर्मो को दोष पूर्ण ढंग से सम्पन्न करना भी अन्य के कर्मो को भलीभांति करने से श्रेयकर है। स्वकीय कर्मो को करते हुए मरना पराये कर्मो में प्रवृत्त होने की अपेक्षा श्रेष्ठतर है, क्योंकि अन्य किसी के मार्ग का अनुसरण भयावह होता है।

इतिहास साक्षी है उनतीस नियमों में से केवल एक ही नियम का अमृतादेवी जैसी वीरांगनाओं के पालन करने पर सम्पूर्ण विश्व में 'प्रकृति प्रेमी बिश्नोई समाज' के रुप में ख्याति अर्जित कर ली अगर हम सम्पूर्ण उनतीस नियमों का पालन करें तो.....।

वास्तव में गुरुमहाराज का दर्शन बहुत व्यापक था तथा विश्व कल्याण की भावना से ओत-प्रोत था। भारत भूमि पर बौद्ध, जैन, पारसी इत्यादि धर्मो का उदय हुआ किन्तु कर्मकाण्डों, भिक्षुओं का नैतिक पतन, तंत्रवाद, मद्य-मांस के सेवन से तीव्र गति से पतन भी हो गया समयानुसारेण सामाजिक बुराइयों को दूर किया होता तो शायद आज यह दशा न होती। ऐसी ही सामाजिक बुराइयों से आज हमारा समाज ग्रसित है। अब हमको आत्म मंथन की जरुरत है कि हम जम्भेश्वर जी द्वारा निर्देशित मार्ग से क्यों भटक गये है।

'' उतिष्ठ! जाग्रत प्राप्य वरान्न निबोध्यत्।
निशित दुरत्यया दुर्गम पथस्तत् कवयों वदन्ति।।
(कठोपनिषद्)

उठो! जागो ! श्रेष्ठ लोगों की संगति करों। विद्वान तलवार की तीक्ष्ण धार पर चलने के समान श्रेष्ठ मार्ग को बताते है।

❒ सुनील गोदारा
प्रधानाध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय 7-पी
एस (राय सिंह नगर)
जिला श्री गंगा नगर (राज.)
मो. 8432227332

पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षक बिश्नोई समाज

भारत के मरुस्थलीय क्षेत्र में ओजस्वी चेहरा, गठीला बदन, लम्बी देह, बड़ी-बड़ी मूंछे , साफ धोती-कुर्ता पहने, साफा बांधे , तेज धूप में लम्बे-लम्बे डग भरते, दिखाई देने वाले 'बिश्नोई' हैं। सुदूर रेगिस्तान में रहने वाले बिश्नोई अतीत से ही धर्म निरपेक्षता , देहज विरोधी, विधवा-विवाह, लैंगिक समानता और महिला स्वतन्त्रता जैसे आधुनिक विचारों के प्रबल समर्थक ही नहीं रहे , बल्कि रेगिस्तान के वृक्षों तथा वन्य जीवों की सुरक्षा के भी सजग प्रहरी रहे हैं। बिश्नोइयों के खेतों में हरे भरे सैकड़ों खेजड़ी के लहलहाते पेड़ और उसकी छांव में निश्चिन्त सुस्ताते वन्य जीव पूर्णयता आश्वस्त है कि वे सुरक्षित हैं। पेड़-पौधों एवं वन्य जीवों की सुरक्षा बिश्नोई का स्वभाविक धर्म हैं। राजस्थान ने युगों से महान संतों ,योगियों , भक्तों एवं वीरों को जन्म दिया हैं। मीरा , राणा प्रताप , वीर दुर्गादास , द्रोणाचार्य , कपिल मुनि जैसी महान आत्माओं का लालन -पालन इसी मरुधरा पर ही हुआ हैं। गुरुदेव जाम्भोजी की जन्मस्थली पींपासर भी राजस्थान का ग्रामांचल हैं। आज से पांच सौ वर्ष पूर्व जाम्भोजी द्वारा स्थापित बिश्नोई समाज जिस धर्म का पालन करता हैं ,वह पर्यावरण एवं वन्य जीव रक्षा के शाश्वत मूल्यों पर ही आधारित माना जाता है। बिश्नोई सम्प्रदाय में पेड़ काटना , जानवरों एवं पक्षियों को मारना धर्म विरुद्ध माना जाता है। यही कारण है कि पर्यावरण को बचाए रखना तथा जीव-जन्तुओं की रक्षा करना बिश्नोई अपना धर्म समझते है।

गुरु जाम्भोजी को अवतारी पुरुष माना जाता हैं। जाम्भोजी ने अपने विचारों को 29 सूत्रों में संजोया इसी कारण इन बीस और नौ सूत्रों को माने वाले अनुयायी बिश्नोई कहलाये। बिश्नोई गुरु जाम्भोजी महाराज के उन्नतीस उपदेशों को सच्चे मन से मानने वाला भक्त हैं। वह सर्वधर्म समन्वय का प्रतीक, प्रकृति का उपासक और शुद्ध शाकाहारी हैं। वह मानता है कि उन्नतीस गुरु आदेशों का योग सनातन धर्म के बीस एवं अन्य धर्मों के नौ उच्च आदर्शों के होने से वह बिश्नोई हैं। स्वास्थय रक्षा, सच्चरित्र, पवित्रता, श्रद्धा, विश्वास, वृक्षों तथा वन्य जीवों की सुरक्षा, वाणी में कोमलता, दयालुता, नम्रता, सत्य का अनुसरण तथा सभी प्रकार के नशीले पदार्थों का त्याग गुरु के आदेशों का सार है। बिश्नोई सभी धर्मालम्बियों को अपने धर्मनिरपेक्ष पंथ में सम्मलित होने के लिए आमन्त्रण देता है। खेती पर जीवन-यापन करने वाला बिश्नोई खेत में अकेला ही काम नहीं करता , उसकी स्त्री भी कंधे से कंधा मिलाकर खेत में काम करती हैं। रेगिस्तान इलाके में प्राय: अकाल की स्थिति रहती हैं। खेती एक जुआ हैं इसलिए बिश्नोई अकेले खेती पर ही निर्भर नहीं है। वह गाय, भैस, ऊंट पालता है किन्तु बकरी व भेड़ नहीं पालता। गाय व भैंस का दूध बिश्नोई के भोजन का प्रमुख भाग होता हैं। दूध के अधिकांश भाग से वह दही, मक्खन तथा घी बनाता है।

वर्षा ऋतु के बाद जब खेती का काम निबट जाता हैं तब खाली समय में बिश्नोई बैठा नही रहता। इन दिनों रस्सी बनाना , खेती के उपकरणों की मरम्मत करना और कोई अन्य कार्य करता हैं अतीत से ही जंगल और उसकी वनस्पति के साथ रहने वाला बिश्नोई वृक्षों और जंगली झाड़ियों का उपयोग घर बनाने, खेत की बाड़ बनाने में करता है, किन्तु इसके लिए हरे पेड़ो को नहीं काटता। एक आदर्श समाज के सभी गुणों के अलावा इनकी बहुमूल्य संस्कृति की झलक यहाँ आसानी से देखी जा सकती है। खेती बाड़ी के अलावा व्यापार व सरकारी सेवाओं में भी यहाँ का बिश्नोई का अन्य समुदायों से अव्वल है बात चाहे खेल के मैदान की हो या शिक्षा क्षेत्र में या सियासी बिश्नोइयों ने हमेशा अपना परचम लहराया हैं बिश्नोई समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय प्रशासनिक सेवा , इंजीनियरिंग से लेकर हर क्षेत्र में अपना नाम कमाया हैं हाल ही में बाड़मेर जिले के धोरीमन्ना क्षेत्र के कृष्ण बिश्नोई का पेरिस स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स में चयन हुआ हैं। पेरिस स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स में चयनित होने वाले सबसे युवा भारतीय हैं। कृष्ण ने धोरीमन्ना में दूध बेचकर प्रारंभिक पढ़ाई की थी , स्कूली पढ़ाई के दौरान फीस भरने के लिए भी पैसे नहीं थे। स्कूल से लौटकर खेत में जाना व शाम को पिता के साथ दूध बेचना मजबूरी था। कृष्ण को फ्रांस सरकार 13.5 लाख रु. स्कॉलरशिप देगी। हरे वृक्षों के प्रति बिश्नोइयों की अटूट श्रद्धा के अनेक उदाहरण मिलते हैं जिसमे खेजड़ली ग्राम का उदाहरण अविस्मरणीय है। करीब ढाई सौ वर्ष पहले औरंगजेब के

शासनकाल में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के मंत्री गिरधरदास भंडारी ने एक नजदीकी ग्राम खेजड़ली से अपने महल के निर्माण के लिए हजारों कारिंदों को कुल्हाड़ियां देकर वृक्ष काटकर लाने के लिए भेजा। पर ग्राम के बिश्नोई पुरुष ही नहीं बल्कि महिलाएं भी वृक्षों को बचाने के लिए उनसे लिपट गयी। कारिंदों ने पेड़ो से लिपटे 363 पुरुषों-महिलाओं के सिर धड़ से अलग कर दिया। हादसे में 69 महिलायें और 294 पुरुषों ने अपने गुरु जम्भेश्वर महाराज की जय बोलते हुए अपना जीवन वृक्षों के लिए समर्पित कर दिया। महाराजा को जब इस घटना की सूचना मिली तो नंगे-पाँव खेजड़ली पहुँच कर पेड़ो की कटाई को रुकवाया और बिश्नोई समुदाय को ताम्रपत्र भेंट दे शपथपूर्वक कहा कि तत्काल जिन स्थानों पर बिश्नोई रहते हैं ,हरे वृक्षों की कटाई पर और वन्य-प्राणियों के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाया जाता हैं। आज बिश्नोई के ग्राम में वनस्पति तथा वन्य जीवों को सुरक्षा मिलने से केवल उनका संरक्षक ही नहीं होता बल्कि पशुओं को तपते रेगिस्तान में ठंडी छाया मिलती हाँ तथा रेतीली जमीन का कटाव भी रुकता हैं। बिश्नोई मानते है कि जो व्यक्ति सभी प्राणियों से प्यार करता हैं केवल वही स्वयं से प्यार करता हैं इसलिए वह अतीत से ही वन्य जीवों की रक्षा करता आ रहा है। ये वन्य जीव बिश्नोइयों की ढाणियों में मस्त होकर विचरण करते हैं। हरे वृक्षों तथा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए बिश्नोई द्वारा किए जाने वाले अथक प्रयास से ही रेगिस्तान में मानव तथा पर्यावरण के संतुलन कायम रह सकता है। श्री जाम्भोजी ने सवा पांच सौ वर्ष पूर्व ही हरे वृक्षों के महत्व को समझाते हुए उनकी रक्षा का भार वहन करने हेतु अपने अनुयायियों को उत्प्रेरित कर दिया था। खेजड़ली को चिपको आन्दोलन का उद्‌भव माना जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी , जहाँ हरे भरे पेड़ों की रक्षा हेतु मनुष्य स्वयं कट गये। आज 250 वर्ष बाद भी बिश्नोई समाज में वृक्ष संरक्षण एक स्वस्थ परम्परा के रूप में जीवित हैं यह समाज आज भी वृक्षों तथा जीव-जन्तुओं की रक्षा उसी साहस से करता है जैसा कि उन्होंने उस समय किया था। यही कारण है कि आज बिश्नोई समाज के गाँव हरे भरे हैं और वहां स्वच्छन्दता से विचरण करने वाले जानवरों को देखकर उनके गाँवों की सहज में ही पहचान हो जाती हैं। काले हिरण बिश्नोई गाँवों के आस पास बड़ी संख्या में दृष्टिगोचर होते हैं। आज यहाँ एक तरफ वन्य- जीवों की नस्लें खत्म होने का खतरा बना हुआ है। वहीं राजस्थान में बिश्नोइयों के गाँवों में जीव मात्र का शिकार पूर्णत: वर्जित हैं। आज विभिन्न पशु-पक्षियों तथा गोडावण जैसे दुर्लभ पक्षी के राजस्थान में उपलब्ध होने का श्रेय गुरुदेव की शिक्षा का उनके अनुयायियों पर पड़े अमिट प्रभाव को ही हैं। यदि सरकारी संरक्षण इस भावना के मुकाबले पचास प्रतिशत ही प्रभावी हो जाय तो पर्यावरण व शुद्ध वातावरण को बनाये रखने की आधी समस्या तो निश्चित रूप से हल होने की प्रबल संभावनाएं बन सकती हैं। श्री जाम्भोजी महाराज की शिक्षाएं वर्तमान काल में भी पूर्णत: प्रासंगिक हैं। उनकी समाधी बीकानेर जिले के नोखामंडी तहसील से 15 किलोमीटर दूरपूर्व दिशा की ओर गाँव तालवा मुकाम में बनी हुई हैं जो आज भी समूचे विश्व में पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण के परिपेक्ष्य में प्रेरणास्त्रोत है और सदा रहेगा। अन्तत: हम यह कह सकते है कि बिश्नोई समाज सही अर्थों में आधुनिक व वैज्ञानिक विचारधारा का प्रतीक है। जिन अंधविश्वासों और प्रकृति का शोषण करने वाली क्रियाओं एवं सामाजिक कुरीतियों के साथ आज का अधिकांश भारतीय समाज जुड़ा हुआ है बिश्नोई उसे अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते प्रतीत होते हैं। वास्तव में बिश्नोई समाज इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

❒ शंकर गोदारा
(एडमिन : एनवायरनमेंट एंड वाइल्डलाइफ
कांसेर्वटर बिश्नोई कम्युनिटी फेसबुक पेज)
छोटू बाड़मेर (राजस्थान)
मो. +91-9414611716

लोक हितार्थ सूचना

श्री बनवारी लाल पंवार निवासी बुवाण, जिला फतेहाबाद पीलिया के माहिर वैद्य हैं और कई वर्षों से समाज की सेवा कर रहे हैं। इनसे पीलिया की दवाई नि:शुल्क प्राप्त की जा सकती है।

दूरभाष : 94676-95887

नशा नाश की निशानी

नशा मनुष्य का प्राणघातक शत्रु है। अफीम, शराब, चाय, चरस, गांजा व भांग हानिकारक हैं। ये दुर्व्यसन मित्र के रूप में हमारे शरीर में घुसते हैं और शत्रु बनकर हमें मार डालते हैं।

ये दुर्व्यसन कुछ थोड़े से व्यक्तियों के जीवन को ही नष्ट नहीं करते वरन् बड़े राष्ट्रों तक को पतन के गर्त में धकेल देते है। इतिहास साक्षी है कि मुगल साम्राज्य का पतन शराबखोरी के कारण हुआ। चीन अफीम खोरी में नष्ट हुआ। मिश्र, यूनान और रोम जैसे पुरातन शक्तिशाली राष्ट्र मद्य के फंदे में फंसकर पतन के गर्त में गिर गए। यही कारण है कि हिन्दू धर्मशास्त्रों में सुरापान की गिनती महापातकों में की गई।

मद्यपान धीमी आत्महत्या : इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि अब शराब का प्रचलन दिनोदिन बढ़ता जा रहा है, जबकि इसमें न कोई शान है और न ही यह स्वास्थ्य की रक्षा करता है। मनुष्य जड़बुद्धि, विवेकहीन, आक्रामक व अपराधी प्रवृत्ति का हो जाता है। यह गलत धारणा है कि शराब से शक्ति प्राप्त होती है। शराब पीने के कुछ काल तक इससे हमारी संचित शक्ति उद्दीप्त मात्र होती है, नई शक्ति नहीं आती है, बल्कि नशे के बाद मनुष्य को निर्बल व निस्तेज बना देती है।

सभ्यता की विष चाय : सभ्य जगत ने अन्य नशीली वस्तुओं की तरह चाय व कॉफी को भी अपना लिया है। हमारे विद्यार्थी वर्ग में भी चाय का खूब प्रचलन है। चाय पिए बिना उनका पढ़ाई में मन नहीं लगता है।

अफीम की मीठी मनुहार : भारत में बच्चों तक को अफीम दी जाती है। सर्दी को भगाने एवं बीमारियां रोकने के लिए इसका उपयोग आम है। बच्चों को अफीम देने से वे नशे में पड़ा रहता है किन्तु उनका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है, भूख मारी जाती है। उल्लास, उत्साह व प्रसन्नता उनके चेहरे से विदा हो जाती है। वृद्ध जन घर पर आए लोगों को अफीम मनुहार करके अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। वे साथ में यह भी तर्क देते हैं कि लोगों को अफीम देने से पुण्य होता है, लेकिन वे नहीं समझते हैं कि जब हम अफीम की मनुहार करते हैं तो नशा नहीं करने वाले भी नशा करने लग जाते हैं। वे गरीबी के गर्त में चले जाते हैं। उनके बच्चे भूखे मरते हैं। उन बच्चों की अंतरात्मा अफीम मनुहार करने वाले लोगों पर रोती रहती है। नौनिहालों की अंतरात्मा को दु:ख पहुंचाकर ऐसे लोगों को पुण्य की बजाय पाप का भागी बनना पड़ता है। समय की आवश्यकता है कि समाज में अफीम मनुहार को बंद किया जाए। किसी की जिन्दगी में अच्छा परिवर्तन लाकर स्वर्ग में न बदल सको तो बुरा परिवर्तन लाकर जिंदगी को नरक में न बदलो।

अपील : समाज के नौजवानों! तुम ऐसे समारोह व उत्सवों का बहिष्कार करो, जिनमें नशे की मनुहार की जाती है। ऐसे उत्सवों को वीरान बना दोगे तो समाज में तेजी से बदलाव हो जाएगा।

❒ मांगी लाल बिश्नोई
गांव छीतर बेरा भोजासर, तह. फलौदी,
जिला. जोधपुर (राज.)
8058640806

हर जीव उपयोगी

सुमेर गढ़ के राजा अजीत सिंह ने एक बार आज्ञा दी कि संसार में कौन-कौन से जीव-जंतुओं का उपयोग नहीं है इस बात की खोज की जाए। उन्होंने एक दल इस खोज के लिए नियुक्त कर दिया। दल ने लंबे समय की खोजबीन के बाद राजा को आकर जानकारी दी कि जंगली मक्खी और मकड़ी किसी भी काम के योग्य नहीं है अर्थात् बिल्कुल बेकार है। राजा अजीत सिंह ने इस खोज के आधार पर सोचा कि जंगली मक्खियों और मकड़ियों को खत्म कर दिया जाए। राजा अभी योजना बना ही रहा था कि इसी बीच उसके राज्य पर एक शक्तिशाली राजा ने आक्रमण कर दिया। युद्ध में राजा अजीत सिंह हार गया। उसे अपनी जान बचाने के लिए जंगल में जाना पड़ा । शत्रु के सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। छिपते-छुपाते वह थक कर एक पेड़ के नीचे गहरी नींद में सो गया। तभी एक जंगली मक्खी ने उसकी नाक पर डंक मारा। पीड़ा से राजा की नींद खुल गई। तभी उसे ख्याल आया कि खुले में सोना सुरक्षित नहीं है, वह एक गुफा में जा छिपा। गुफा में बहुत सी मकड़ियां थी। राजा के गुफा में जाने के बाद मकड़ियों ने गुफा के द्वार पर जाला बुन दिया। शत्रु के सैनिक राजा को ढुंढते हुए गुफा के नजदीक पहुंचे। द्वार पर घना जाल देख कहने लगे राजा यहां नही है। अगर यहां होता तो मकड़ी का जाला टूटा हुआ होता। चलो आगे ढूंढते है। सैनिक आगे निकल गए। गुफा में छिपा राजा शत्रु की बाते सुन रहा था। उस समय राजा की समझ में यह बात आई कि संसार में कोई भी प्राणी या चीज बेकार नही है। अगर जंगली मक्खी और मकड़ी नहीं होती तो उसकी जान नही बच पाती। अत: हमें किसी भी जीव को मारना नहीं चाहिए क्योंकि परमात्मा का बनाया हुआ कोई भी जीव व्यर्थ नहीं है।

❒ बजरंग लाल बिश्नोई (डेलू)
ग्राम काकड़ा, नोखा, जिला बीकानेर (राज.)

अक्टूबर में होगी जांभाणी ज्ञान परीक्षा

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर के तत्वावधान में जांभाणी ज्ञान परीक्षा आयोजित की जाएगी। यह परीक्षा अक्टूबर, 2013 में आयोजित होगी, जिसकी निश्चित तिथि बाद में घोषित की जाएगी। इस परीक्षा में 5वीं से 8वीं कक्षा तक अध्ययनरत विद्यार्थी ही भाग ले सकेंगे। इसके लिए 15 जुलाई से 31 अगस्त 2013 तक आवेदन पत्र भरे जाएंगे। आवेदन पत्र व नियमावली तहसील व जिला प्रभारी से प्राप्त किया जा सकती है तथा अकादमी की वेबसाइट www.jambhani.com से भी डाउनलोड किया जा सकता है। परीक्षा शुल्क मात्र 10 रू. है। इस परीक्षा में जिला, प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को नकद राशि व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी अपने तहसील या जिला प्रभारी से सम्पर्क करें जो इस प्रकार है-

हिसार-जिला प्रभारी-कृष्ण काकड़ (94162-15718), **तहसील-प्रभारी आदमपुर** मास्टर धोलूराम भादू (94662-39389), **हिसार**-देवेन्द्र धायल (94681-42113), **उकलाना**-चेतराम बरड़ (94667-27274), **फतेहाबाद-जिला प्रभारी** सुग्रीव कड़वासरा (94671-58458), **तहसील प्रभारी फतेहाबाद** - ओमप्रकाश बिश्नोई (94165-43303), **रतिया**-मोहन बिश्नोई (94667-29957), **टोहाना**- सतबीर बैनीवाल (94162-80054), **भूना उपतहसील** -अनिल कुमार (98966-10800), **सिरसा-जिला प्रभारी** - इन्द्रजीत धारणिया (94163-63802), **तहसील प्रभारी डबवाली**- प्रिंसीपल हंसराज बिश्नोई (94660-02016), **सिरसा**-डॉ. मनीराम सहारण (94163-05380), **भिवानी जिला प्रभारी**- सियाराम पूनिया (99929-77345), **पंचकुला**-श्री पृथ्वी सिंह बैनिवाल (94676-94029), **मोहाली-चण्डीगढ़**-मोहन बिश्नोई (98883-10885),

पंजाब प्रभारी- श्री विनोद जम्भदास (94176-81063),

मध्यप्रदेश-हरदा- पूनमचंद पंवार (98260-52653), **देवास**-किशनलाल खिलेरी (97552-33820), **उत्तराखंड-देहरादून**-ओमराज सिंह बिश्नोई (78956-45607), **हरिद्वार**- विजयपाल सिंह बिश्नोई (99271-91996),

उत्तरप्रदेश-लखनऊ - श्रवण बिश्नोई (80051-99364), **कानपुर** -प्रेमनाथ (94154-31398), **मुरादाबाद** - योगेन्द्रपाल सिंह बिश्नोई (74092-00509), **बीजनौर**-टीकेन्द्र कुमार, **कांठ तहसील**- मास्टर राजबीर सिंह (98371-45642), **मुरादाबाद तहसील**-मास्टर रमेश कुमार,

राजस्थान -बीकानेर जिला प्रभारी-ओमप्रकाश भादू व्याख्याता (98299-87479), **तहसील प्रभारी-नोखा** - रामस्वरूप ज्याणी प्रधानाध्यापक (94132-11347), **कोलायत**- प्रेम कुमार खिचड़ व्याख्याता (94624-88529), **लूणकरणसर** -ओमप्रकाश बिश्नोई प्रधानाध्यापक (94131-68535), **बीकानेर** -रामस्वरूप धायल अध्यापक (94132-78423),

श्री गंगानगर-जिला प्रभारी-सुरेन्द्र सुंदरम् व्याख्याता (94142-46712), **तहसील प्रभारी -गंगानगर**- अमित कुमार (95098-86236), श्याम बिश्नोई (98875-29429), **पदमपुर**-दयाराम खिचड़ (94135-38892), **रायसिंहनगर**-इन्द्रदेव (94144-34230), **घड़साना**-राजेन्द्र बिश्नोई (99820-99015), **अनूपगढ़**- शिवदत्त खिचड़ (94145-07933), **सूरतगढ़**- महेश कुमार (99820-39590), किशन लाल (99284-90717), **अजमेर**-श्री नीरज बिश्नोई (97997-52929), **जयपुर**- तुलसीराम मांझू (93514-88229), **जैसलमेर**-मांगीलाल अज्ञात (94600-38049),

नागौर-जिला प्रभारी -श्री मोहनलाल लोहमरोड़ (94141-03029), **तहसील प्रभारी -जायल**- जंवरीलाल भादू (98288-20783), **नागौर**-श्री गंगाबिशन डेलू (94131-07103), **खींवसर**-मनीराम जाखड़ (95715-35006), **मकराना**- हरीराम जोधकण (94611-24929), **डेगाना**-रामदेव राहड़ (94142-90334), **मेड़ता** -जगदीश लोहमरोड (94609-53657),

बाडमेर जिला प्रभारी-बंशीलाल ढाका (94605-38429), **तहसील प्रभारी -बाडमेर** -गणपत लाल (97832-44494), **धोरीमन्ना**-बाबूलाल तेतरवाल (94146-33239), **रामसर**-श्री मांगीलाल खिलेरी (94131-63438), **सेडवा**-मोहनलाल खिलेरी (97998-35529), **गुड़ामालानी**-हेमेन्द्र कुमार (96803-10199), **चौहटन**-सुजानाराम ढाका (94604-64621), **पंचपदरा**- जेताराम गोदारा (94623-03363), **सिवाना**- मनोहरलाल ढाका (90011-17948),

जालौर-जिला प्रभारी-उदाराम खिलेरी (98287-51199), **तहसील प्रभारी -सांचौर**-किशनलाल सहारण (90014-59787), **चितलवाना**-सुरजनराम सहू (80038-35729), **रानीवाड़ा**-हेमराज गोदारा (98289-86148), **जसवंतपुरा**-पूनमचंद सिहाग (94145-46471), **भीनमाल**-रघुनाथ खिलेरी (94686-44079), **जालौर**-शिवनारायण गिला (94148-92956),

जोधपुर जिला प्रभारी-मास्टर मूलाराम लोल (9784010898)

शहर- रामस्वरूप जंवर (09782005752), **झंवर**- देवाराम कांवा (09950248253), **लूणी**- बाबूलाल मांजू, (09414827711), **मण्डोर**- बीरमाराम पंवार (08890001864), **भोपालगढ**- हनुमानराम सहू (09772422853), **बिलाड़ा**- घेवरराम ईराम (09252161057), **लोहावट**- पुखराज ढाका (09414564100), **बाप**-मांगीलाल सियाक (09982534009), **फलोदी**- बुधराम जांणी (08104671358), **आउ**- मोतीराम कालीराणा (09928328101) **ओसियां** - रामप्रताप जांणी (09414371492),

जिला - पाली प्रभारी- हनुमानराम धायल (09829261247),

हनुमानगढ़-जिला प्रभारी- हनुमान भांभू (9462588997), **तहसील प्रभारी-रावतसर**-मास्टर रंगलाल (99824-10805), **पीलीबंगा**-रिछपाल भादू (97724-29250), **टिब्बी**-अमित बिश्नोई (75680-19589), **संगरिया**-हेतराम थापन (94145-81189), **भादरा**-हरिसिंह (97725-57225),

दिल्ली एनसीआर-डा. मनमोहन लटियाल (9999206695),

सभी अभिभावकों से अनुरोध है कि बच्चों को अधिक से अधिक इस परीक्षा में भाग लेने के लिए प्रेरित करें ताकि वे इस माध्यम से 'गुरु जम्भेश्वर भगवान और बिश्नोई पंथ' के विषय में कुछ जान सकें। इस परीक्षा के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित लघु पुस्तिका अकादमी की ओर से प्रकाशित की जा रही है, जो अगस्त तक उपलब्ध हो जायेगी।

- डॉ. बनवारीलाल सहू
मुख्य परीक्षा संयोजक, उपाध्यक्ष व प्रवक्ता
जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर (राज.)
मो. : 94148-75029

चौ. भजनलाल जी की स्मृति में

जज्बातों को काबू करके, बातों से बात बनाता रहा तूं।
मेहरबान तूं था जो ऐसा, गले मुफलिसों को लगाता रहा तूं।।
इंसानों की महफिलों में अकसर, जिक्र होता रहेगा तेरा।
हो सके तो नेकी देख लेना, ता उम्र जो कमाता रहा तूं।।
चिंता करता रहा हरदम तूं, अपने अजीज हमदिलों की।
पेड़ बनकर जो आज खड़े हैं, बाग ऐसा उगाता रहा तूं।।
आवाज करके बुलंद अपनी, करता सत्य उजागर हमेशा।
आज हौंसला है वैसा किसमें, जैसे दुश्मनों को छकाता रहा तूं।।
आई मुश्किलें कैसी भी चाहे, गुरु के धाम अवश्य तूं आया।
शुभ आशीर्वाद जब तूनै पाया, शीश अपना झुकाता रहा तूं।।
घड़ी संकट की कैसी ये आई, चुप क्यों हो गया बोलने वाला।
मर्जी खुदा की है ये वरना, हर विपत्ति में इठलाता रहा तूं।।

-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी-111, समता नगर, बीकानेर (राज.)

ज्यों-ज्यों नाम विष्णु के दीजै, अनंत गुणा लिख लीजै

श्री छबीलदास सुपुत्र श्री ओम प्रकाश धायल निवासी गांव सीसवाल, तहसील आदमपुर ने अक्षय तृत्तीया के दिन आदमपुर गांव में निर्माणाधीन गुरु जम्भेश्वर मंदिर के निर्माण हेतु 2 लाख 11 हजार रूपए दान दिया। आप अमर ज्योति को भी प्रति माह 2900 रूपए का दान नियमित रूप से देते हैं।

राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार शिविर आयोजित

बिश्नोई सभा हिसार व जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर द्वारा अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हुए एक सराहनीय कदम आगामी पीढ़ी के हितार्थ जाम्भाणी संस्कार शिविर के रूप में उठाकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति का एक उत्कृष्ट उदाहरण श्री बिश्नोई मंदिर हिसार के परिसर में प्रस्तुत किया गया। जाम्भाणी साहित्य का प्रकाशन, जाम्भाणी ज्ञान परीक्षा का आयोजन और अब जाम्भाणी संस्कार शिविर का दिनांक 1 जून 2013 से 7 जून 2013 तक सात दिवसीय कार्यक्रम निसन्देह एक अनुपम व अत्यन्त उपयोगी कार्य है।

दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारंभ करते श्री उदयभानु हंस, श्री बृजलाल जी एडवोकेट, श्री सुभाष देहडू, राजाराम खिचड़ व अन्य अतिथिगण।

यह शिविर 1 जून 2013 को प्रात: 10 बजे बिश्नोई मंदिर हिसार के सभा भवन में उद्घाटन समारोह के साथ आरंभ हुआ। शिविर में 137 बिश्नोई युवा व किशोरों ने (13 वर्ष से 18 वर्ष) अपने पंजीकरण करवाकर शिविर को विशालता प्रदान की। उद्घाटन सत्र को मुख्यातिथि हरियाणा के राज्य कवि एवं साहित्य जगत के प्रख्यात हस्ताक्षर श्री उदयभानु हंस की उपस्थिति तथा वयोवृद्ध अधिवक्ता श्री बृजलाल जी खिचड़ की अध्यक्षता ने गरिमामय स्वरूप प्रदान किया। बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू ने शिविर में भाग लेने आये बच्चों अध्यापकों का हार्दिक स्वागत किया। उद्घाटन सभा को मुख्यातिथि अध्यक्ष के साथ-साथ कामरेड रामेश्वर डेलू, श्री हेतराम धारणियां, श्री नरसीराम थालोड़, डॉ. मदन खिचड़, मास्टर धोलूराम, डॉ. मनीराम सहारण व डॉ. अशोक सभ्रवाल ने सम्बोधित किया। 12 बजे समारोह सम्पन्न हुआ तब आगे का कार्यक्रम विधिवत प्रारंभ हुआ। पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश से आये बच्चों ने स्थानीय हरियाणवी बच्चों के साथ मिलकर शिविर को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र में डॉ. दिनेश चहल द्वारा व्यक्तित्व विकास के मुख्य सूत्र नामक विषय पर व्याख्यान दिया गया। डा. मनमोहन लटियाल द्वारा भगवान श्री जम्भेश्वरजी की अवतार पृष्ठ भूमि के संदर्भ में सुंदर व ज्ञान वर्द्धक प्रस्तुति की गई। भोजन व जलपान के छोटे-छोटे अन्तरालों के साथ-साथ प्रथम दिवस का कार्यक्रम अंतिम चरण में सायं कालीन यज्ञ, साखी व आरती गायन के साथ लगभग 8 बजे सम्पन्न हो गया। सभी बच्चे व प्रशिक्षक रात्रि विश्राम को अपने अपने निवास स्थल पर चले गए।

द्वितीय दिवस प्रात: सभी प्रशिक्षुओं को श्री बंसीलाल ढाका (बाडमेर राजस्थान) के सहयोग से 04 बजे सोते से उठकर दिवस के प्रथम सत्र योग प्रशिक्षण हेतु तैयार किया। योग प्रशिक्षण की जिम्मेदारी श्री सोनू शास्त्री व कैलाश शास्त्री जो स्वामी रामदेव योग शिक्षा संस्थान से पधारे थे, उन्होंने निर्वघ्न पूरी की। प्रात: कालीन यज्ञ में श्री मांगीलाल 'अज्ञात' व श्री बनवारी लाल सोढ़ा द्वारा सबदवाणी व गुरुदीक्षा मंत्र, पाहल मंत्र आदि का उच्चारण करने का ढंग व आहुति देने की विधि बच्चों को सिखाई। उपरान्त में द्वितीय दिवस के कार्यक्रम के समापन तक डा. मनमोहन लटियाल, डा. दिनेश नागपाल, श्री अशोक बिश्नोई H.C.S, द्वारा बच्चों को क्रमश: जाम्भाणी जगत की ऐतिहासिक जानकारी व कैरियर चुनाव व विकास आदि विषयों पर अनुभव युक्त व अत्यन्त उपयोगी वक्तव्य प्रस्तुत किये गये। सांयकालीन सत्र में पंजाब प्रांत से पधारे श्री विनोद जम्भदास जी ने अनवरत रूप से दो सत्रों में भगवान श्री जाम्भोजी की जन्म से लेकर निर्वाण काल तक की दिव्य घटनाओं, लीलाओं व चमत्कारों से सभी प्रशिक्षुओं को अवगत कराया तथा विगत दिवस की भांति संध्या कालीन यज्ञ हवन आरती व साखी गायन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। बिश्नोई समाज के उत्कृष्ट विद्वान आचार्य व शिक्षा शास्त्री संत डॉ. गोवर्धन राम का बच्चों को सम्बोधित करना आज की विशिष्ठ उपलब्धी रही। आचार्य जी ने जांभाणी संस्कारों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

सत्र के तीसरे दिन अर्थात् 3 जून 2013 को बिश्नोई समाज शिरोमणि बिश्नोई रत्न श्री भजनलाल जी की पुण्य तिथि के संदर्भ में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम (रक्तदान शिविर) को देखते हुए शिविर का दोपहर तक का कार्यक्रम स्थगित रहा। बच्चों व आयोजकों ने उक्त कार्यक्रम में ही सांझेदारी की। 3.30 बजे से पुन: शिविर के सत्र प्रारंभ हुए जिसमें

विनोद जम्भदास ने भगवान श्री जाम्भोजी की जीवन गाथा को पूर्ण रूप से बच्चों के सामने प्रस्तुत करके भगवान श्री जाम्भो जी की अवतार लीलाएं विषयक महत्वपूर्ण विषय का समापन किया। संध्या कालीन यज्ञ आदि कार्यक्रम पूर्व की तरह चलते हुए तृतीय दिवस को समापन की ओर ले गये।

चतुर्थ दिवस के सत्रों में क्रमशः हवन, मंत्रों का परिचय एवं महत्व विषय पर श्री मांगीलाल 'अज्ञात', तनाव प्रबंधन पर डा. संदीप राणा श्री गुरु जम्भेश्वर विश्व विद्यालय हिसार, बिश्नोई समाज के अष्ट धाम परिचय, बंसीलाल ढाका तथा जांभाणी संस्कृति की प्रस्तुति श्री कृष्ण काकड़ द्वारा की गई। भोजन अंतराल के बाद के सत्रों में मनुष्य के लिए समाज का महत्व व सामाजिक संगठन की आवश्यकता, राजकुमार सेवक तथा जाम्भाणी साहित्य की भूली बिसरी विरासत उदयराज खिलेरी द्वारा तथा बिश्नोई समाज की गौरवमयी विभूतियां व उनका योगदान श्री नरसीराम थालौड़ द्वारा ज्ञान वर्द्धक व शिक्षाप्रद वक्तव्य प्रस्तुत किये गये। संध्या कालीन यज्ञ में श्री मांगीलाल अज्ञात द्वारा पूर्वानुसार मंत्रों का उच्चारण पाठन यज्ञ में सबदवाणी के सबदों का पाठ इत्यादि का ज्ञान कराया गया। आज बच्चों की पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन सायं कालीन सत्र में किया गया।

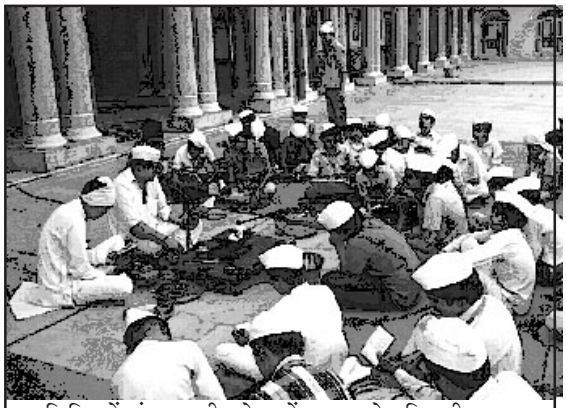
शिविर में संध्याकालीन वेला में यज्ञ करते प्रतिभागी छात्र।

शिविर का पांचवा दिन 5 जून पर्यावरण दिवस होने के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। प्रातःकालीन योग प्रशिक्षण में आज एक अनुभवी व विनोदी प्रभावशाली व्यक्ति की उपस्थित श्री मा. रामपाल खर्ब के रूप में रही। उन्होंने बच्चों को मनोरंजन ढंग से खेल-खेल में योग की शिक्षा दी जो बच्चों को भी रूचिकर लगी। उपरान्त में प्रातः कालीन यज्ञ का कार्यक्रम तथा डा. राधेश्याम जी शुक्ल का सांस्कृतिक पर्यावरण पर प्रवचन, डा. अनीता द्वारा पर्यावरण का महत्व आदि वक्तव्य अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक शिक्षाप्रद रहे। बीकानेर से पधारे डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने वृक्षों व जीवों की रक्षा के लिए बिश्नोइयों द्वारा दिये गये बलिदानों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उपरान्त में बच्चों की भाषण व गायन प्रतियोगिता बंसीलाल जी व उदयराज खिलेरी द्वारा कराई गई। डॉ. कृष्णलाल जी, विनोद जम्भदास आदि ने निर्णायक की भूमिका निभाई। संध्या समय डा. मदन खिचड़ द्वारा एक ज्ञानवर्द्धक वक्तव्य व फिल्म प्रदर्शन बच्चों के लिए उपयोगी रहा।

रात्रि 8 बजे से देर रात 11 बजे तक शिविर कार्यक्रम के अन्तर्गत ही कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया, जिसमें हिसार के स्थानीय कवियों के कविता पाठ के साथ-साथ उतर प्रदेश के वयोवृद्ध साहित्यकार एवं कवि श्री योगेन्द्र पाल जी सहित, कृष्णलाल जी व राजकुमार सेवक तथा बंसीलाल ढाका ने पर्यावरण पर आधारित काव्य पाठ किया।

शिविर के छट्ठे दिन 4 बजे कार्यक्रम योग शिक्षा से प्रारंभ हुआ। फिर प्रातः कालीन यज्ञ, सबद पाठ, संध्यामंत्र गुरुमंत्र आदि की पाठ शिक्षा मांगीलाल जी द्वारा दी गई। उपरान्त के सत्रों में प्रथमतः जाम्भाणी साहित्य अकादमी की संरक्षिका डा. सरस्वती बिश्नोई द्वारा सांस्कृतिक प्रदूषण व अनुशासन के महत्व पर प्रवचन बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। तदोपरान्त श्री धोलूराम जी भादू, श्री कृष्ण काकड़, अनिल गुगनानी, श्री. मा. रामपाल खर्ब द्वारा विभिन्न विषयों पर अत्यन्त उपयोगी व समयोचित वक्तव्य प्रस्तुत किये गये।

संध्या समय बिश्नोई सभा हिसार के अध्यक्ष महोदय के कार्यालय में जाम्भाणी साहित्य, अकादमी की एक बैठक हुई जिसमें डा. सरस्वती द्वारा दूरदर्शन पर एक कार्यक्रम अविराम रूप से चलाने की घोषणा की जिसका सभी उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया तथा इस अभियान को अविराम रूप से चलते रहने की कामना की। रात्रि को जांभाणी ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 17 टीमों ने भाग लिया।

शिविर का सातंवा अर्थात् समापन दिवस अपने आप में एक गौरवमयी स्मृति को समेटे हुए अतीत में समा गया। प्रातः योग शिक्षा, प्रातःकालीन यज्ञ के उपरान्त निवारण डा. नरसी राम बिश्नोई द्वारा पर्यावरण प्रदूषण के कारण एवं निवारण, डा. बनवारी लाल साहू द्वारा बिश्नोई लोक साहित्य और संस्कृति पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया।

उपरान्त में माननीया सरस्वती बिश्नोई व बृजलाल जी एडवोकेट के आतिथ्य में समापन समारोह प्रारंभ हुआ, जिसमें शिविर प्रभारी के रूप में राजकुमार सेवक द्वारा शिविर की साप्ताहिक गतिविधियों की क्रमिक प्रस्तुति की गई। उपरान्त में बिश्नोई सभा हिसार के अध्यक्ष श्री सुभाष देहडू, सचिव

मनोहरलाल गोदारा, कोषाध्यक्ष राजाराम खिचड़, सह सचिव जगदीश कड़वासरा, उपप्रधान अमर सिंह मांझू, रामकुमार कड़वासरा, श्री कृष्ण राहड़, श्री कृष्ण बैनीवाल, श्री भगवाना राम फुरसानी, श्री रामेश्वर डेलू, श्री बनवारीलाल ईशरवाल, श्रवण खिचड़, मदन खिचड़ आदि ने विभिन्न प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को जाम्भाणी साहित्य अकादमी का प्रतीक चिन्ह व प्रमाणपत्र प्रदान किये। शिविर के आयोजन को सफल बनाने में अपना अथक व अमूल्य योगदान देने वाले श्री औमप्रकाश कैनेडी, श्री दलीप परोपकारी, श्री महेन्द्र माल, सेवक राजेन्द्र कुमार व बलबीर आदि विभिन्न व्यक्तियों को भी प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किये गये। उक्त श्रेणी में जाम्भाणी साहित्य अकादमी के कार्यालय सचिव हरिनारायण बिश्नोई, राजू सोढ़ा, विद्युतकर्मी ओमप्रकाश, सहायककर्मी महावीर, अंग्रेज सिंह, पवन धतरवाल तथा बिश्नोई सभा हिसार के कार्यालय सचिव श्री भूप सिंह जी का विशेष तौर पर आभार प्रकट किया गया। उपरान्त में डा. सरस्वती जी व बृजलाल जी के आशीर्वचनों के साथ सप्त दिवसीय राष्ट्रीय जाम्भाणी संस्कार शिविर का उल्लासमय समापन बिश्नोई समाज की एक ऐतिहासिक धरोहर बनकर चिर स्मृत हो गया। सभी अतिथियों ने बिश्नोई सभा, हिसार का शिविर को सफल बनाने के लिए आभार प्रकट किया।

समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते श्री सुभाष देहडू व डॉ. (श्रीमती) सरस्वती बिश्नोई।

❒ राजकुमार सेवक
संगठन सचिव, जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर

श्री बी.डी. अग्रवाल ने दिया अकादमी भवन हेतु 21 लाख का चैक

बीकानेर की व्यास कालोनी में निर्माणाधीन जांभाणी साहित्य अकादमी के भवन हेतु प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बजरंग दास अग्रवाल (गंगानगर), राष्ट्रीय अध्यक्ष जमींदारा पार्टी ने 21 लाख रूपए की राशि अकादमी को प्रदान की है। श्री अग्रवाल का कहना है कि साहित्य किसी एक जाति का न होकर पूरे समाज का होता है, इसलिए हम सभी को इसी दृष्टि से इसका प्रचार-प्रसार करना चाहिए। जांभाणी साहित्य अत्यन्त ही समृद्ध व उच्चकोटि का है। इसमें उच्च कोटि के मानव मूल्य निहित हैं। इसके प्रचार-प्रसार से गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार होगा, जिससे विश्व की समस्याओं का समाधान होगा। डॉ. बनवारी लाल सहू ने इस अवसर पर श्री अग्रवाल को जांभाणी साहित्य भेंट किया व पूरी कार्यकारिणी की ओर से श्री अग्रवाल का हार्दिक धन्यवाद किया।

अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. बनवारी लाल सहू को चैक भेंट करते श्री बी.डी. अग्रवाल

बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल की स्मृति में गोष्ठी आयोजित

अजमेर जिले के अखिल भारतीय जीव रक्षा के अध्यक्ष नीरज बिश्नोई के अनुसार ''बिश्नोई रत्न''चौधरी भजनलाल जी पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार की दूसरी पुण्य तिथि दिनांक 03-06-2013 को अजमेर में मानाई गई। इस अवसर पर दिवंगत महान आत्मा की याद में दो मिनट का मौन रखा गया। इस अवसर पर एक विचार गोष्ठी चौधरी भजनलाल जी साहब की स्मृति में रखी गई। इस विचार गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉक्टर गोपाल बाहेती पूर्व विधायक पुष्कर,अजमेर के पूर्व नगर सुधार न्यास अध्यक्ष व वर्तमान बीस सुत्रीय क्रियान्वयन समिति के उपाध्यक्ष थे, जिन्होंने विचार गोष्ठी में बोलते हुए कहा कि चौधरी साहब जमीन से जुड़े नेता थे। जिन्होंने अपनी राजनीतिक जीवन की शुरूआत ग्राम पंच से की और हरियाणाा के तीन बार मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री व अनेक बार सांसद व विधायक रहे। इस विचार गोष्ठी में अध्यक्ष नीरज बिश्नोई ने''बिश्नोई रत्न'' किसान नेता चौधरी भजनलाल जी साहब के लिए बोलते हुए कहा कि बिश्नोई समाज के बारे में भारत में काफी कम जानकारी थी परन्तु चौधरी भजनलालजी के कारण बिश्नोई समाज को भारत में ही नही अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई और बिश्नोई समाज आदर व सम्मान के साथ देखा जाने लगा। विचार गोष्ठी में सुरेश चौधरी, अनुराग, एडवोकेट रोशन सिंह, मनोज कुमार सिंह, सांवरमल व ए.के. बिश्नोई आदि उपस्थित थे।

❒ नीरज बिश्नोई, अजमेर (राज.)

''बिश्नोई रत्न'' स्व. चौ: भजनलाल जी की दूसरी पुण्यतिथि 3-6-2013 को महारक्त दान शिविर व श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन

बिश्नोई सभा हिसार व अखिल भारतीय श्री गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में 3 जून 2013 को बिश्नोई मन्दिर हिसार के प्रांगण में ''बिश्नोई रत्न'' स्व. चौ: भजनलाल जी की दूसरी पुण्य तिथि के उपलक्ष में एक महारक्तदान शिविर व श्रद्धांजलि समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस महारक्तदान शिविर का शुभारम्भ चौ: कुलदीप जी बिश्नोई (सांसद) व संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा किया गया।

चौ. कुलदीप बिश्नोई का स्वागत करते सभा प्रधान व अन्य पदाधिकारीगण।

बिश्नोई मन्दिर के प्रांगण में 3 जून 2013 को सुबह 7 बजे श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के द्वारा बताये गये 120 शब्दों का पाठ कर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन यज्ञ मुकाम से पधारे हुऐ सन्त सुखदेवजी द्वारा व बिश्नोई मन्दिर के मुख्य पुजारी बनवारीलाल जी सोढ़ा द्वारा किया गया व पाहल बनाया गया।

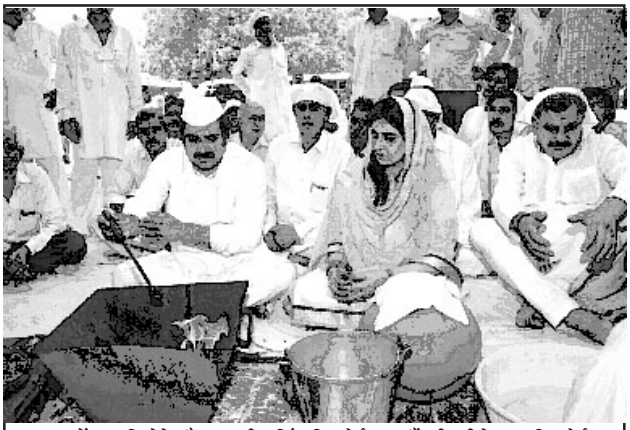

हवन में आहुति देते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई साथ हैं श्रीमती रेणुका बिश्नोई, श्री सुभाष देहडू व रणधीर पनिहार।

सुबह 9:30 बजे मुख्य अतिथि चौ: कुलदीप जी बिश्नोई व आदमपुर की विधायिका श्रीमति रेणुका जी बिश्नोई मन्दिर के प्रांगण में पधारे। बिश्नोई मन्दिर हिसार के मुख्य द्वार पर माननीय चौ: कुलदीप बिश्नोई एवम् विधायिका श्रीमती रेणुका जी बिश्नोई का बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान सुभाष देहडू, श्री देवीलाल बिश्नोई मीडिया कार्डिनेटर, हजकां, मनोहरलाल गोदारा सचिव, राजाराम खिचड़ कोषाध्यक्ष, ताराचन्द जी खिचड़ प्रधान बिश्नोई सभा फतेहाबाद, कामरेड रामेश्वर डेलू प्रधान जीव रक्षा हरियाणा, श्री ओमप्रकाश जाजूदा प्रधान श्री गुरु जम्भेश्वर कर्मचार कल्याण समिति, सचिव डॉ. मदन खिचड़, जम्भेश्वर सेवक दल हिसार के प्रधान सहदेव कालीराणा, बिश्नोई सभा हिसार के उपप्रधान कृष्ण राहड़, हेतराम धारणिया, रामकुमार कड़वासरा, भगवानाराम फुरसाणी, अमरसिंह मांझू, कृष्णकुमार जी बैनिवाल, सहसचिव जगदीश कड़वासरा रतिया सभा के प्रधान रामस्वरूप बैनिवाल, टोहाना सभा के प्रधान आसाराम लोहमरोड़, दिल्ली सभा के प्रधान हनुमानसिंह गोदारा, जाम्भाणी साहित्य अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्र खिचड़, सेवकदल के सचिव धोलुराम भादू, राजकुमार जी सेवक, योगेन्द्रपाल जी बिश्नोई, मांगीलाल जी 'अज्ञात', बंशीलाल जी ढ़ाका, उदयराज जी खिलेरी, डॉ. मनमोहन जी लटियाल, लाडूराम जी व समाज के सभी गणमान्य व्यक्तियों नें कुलदीप बिश्नोई व श्रीमती रेणुका बिश्नोई का फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया।

स्वागत समारोह के बाद मुख्य अतिथि हवन यज्ञ में पूर्ण आहुति डालने हेतु पहुंचे व पाहल ग्रहण किया। पाहल ग्रहण उपरान्त चौ: कुलदीप बिश्नोई एवम् श्रीमती रेणुका बिश्नोई नें ''बिश्नोई रत्न'' स्व. चौ: भजनलाल जी के श्रद्धांजलि समारोह में चौ: साहब को पुष्पों से श्रद्धाजलि दी। इस अवसर पर उन्होंनें समाज के

लोगों को ''बिश्नोई रत्न'' स्व. चौ: भजनलाल जी के दिखाऐ हुऐ रास्ते पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा चौ: साहब किसी जाति के नेता नहीं थे उन्होंनें हमेशा 36 बिरादरी के लोगों का भला किया व समाज का चहुंमुखी विकास किया चौ. भजनलाल जी की देन है कि आज पूरा बिश्नोई समाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बना चुका है। आज समाज को उन जैसे मूल्यों वाले नेता की जरूरत है जिन्होंने हमेशा मानव जाति के कल्याण के लिये काम किया।

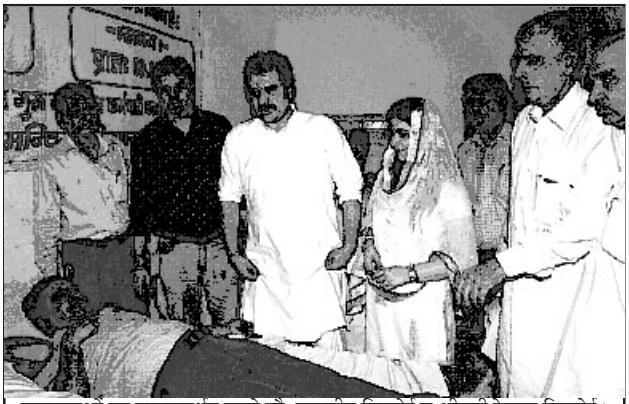
रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते चौ. कुलदीप बिश्नोई व श्रीमती रेणुका बिश्नोई।

इस उपरान्त उन्होंने विधिवत् रूप से रक्तदान शिविर का शुभारम्भ किया। इस रक्तदान शिविर में महाराजा अग्रसैन मेडिकल कॉलेज की टीम का भी विशेष सहयोग रहा। रक्तदान में सुबह से ही रक्त देने वालों की लम्बी कतारें लगी हुई थी। पंजीकरण करवाने वालों की संख्या 500 का आंकड़ा पार कर चुकी थी। परन्तु मेडिकल टीम के पास सिर्फ 300 युनिट रक्त लेनें का प्रबन्ध ा था।

अन्त में मुख्य अतिथि चौ: कुलदीप बिश्नोई एवम् श्रीमती रेणुका बिश्नोई नें लंगर में प्रसाद ग्रहण किया व बिश्नोई सभा हिसार का धन्यवाद किया व कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा पुण्य है। मैं इस कार्य के लिये बिश्नोई सभा हिसार व अखिल भारतीय श्री गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति के कार्य की प्रशंसा करता हूं।

समारोह समापन पर बिश्नोई सभा हिसार ने समारोह के सफल आयोजन के लिये सभी सभाओं, सेवकदल के सभी कार्यकर्ताओं व बिश्नोई समाज के युवा कार्यकर्ताओं का जिन्होंने रक्तदान शिविर में अपना रक्तदान दिया उन सभी का धन्यवाद किया।

श्री राणाराम ने किया दिल्ली में पौधारोपण

अब तक अपने जीवन में 35 हजार से अधिक पेड़ लगाकर पूरे मारवाड़ में अपनी पहचान बना चुके एकलखोरी जिला जोधपुर निवासी श्री राणाराम बिश्नोई ने इस वर्ष पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली में अपनी उपस्थित दर्ज करवाई। संस्थान भवन में आयोजित पर्यावरण सम्मेलन में भाग लेने के उपरांत श्री राणाराम ने पर्यावरण प्रेमियों के साथ जन्तर-मन्तर पर पहुंचकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस मार्चपास्ट में उनके साथ अनेक पर्यावरण प्रेमी थे। जन्तर-मन्तर पर प्रदर्शनी आयोजित करने के बाद श्री राणाराम जी पूर्व केन्द्रीय मंत्री पर्यावरण प्रेमी माननीया सांसद मेनका गांधी जी से उनके निवास स्थान पर मिले और कंकेडी का पेड़ भेंट किया। इसके पश्चात् सभी पर्यावरण प्रेमियों ने बीकानेर के सांसद अर्जुनराम मेघवाल की अगुवाई में राष्ट्रपति भवन के पास नार्थ एवेन्यू (एम. पी.फलेटस) के गार्डन मे खेजड़ी का पेड़ लगाया। इस अवसर पर श्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि बिश्नोई समाज पर्यावरण प्रेम व जीव रक्षा के लिए पूरे विश्व में अपनी पहचान रखता है। आज आवश्यकता है कि पूरा विश्व गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चले क्योंकि आज पर्यावरण प्रदूषण की जो समस्या है उसका समाधान गुरु जम्भेश्वर भगवान के धर्म नियमों में ही मिलता है।

श्रीमती मेनका गांधी के साथ श्री राणाराम, डा. तेजाराम बिश्नोई व महेश धायल आदि पर्यावरण प्रेमी।

-महेश धायल, AIIMS, दिल्ली

श्री गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन दिल्ली में पर्यावरण सम्मेलन आयोजित

श्री गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन दिल्ली की प्रबंधन समिति के द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस से पहले दिन दिनांक 4-6-2013 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस राष्ट्रीय आयोजन का विषय था- ''वर्तमान युग में गुरु जम्भेश्वर जी के सिद्धान्तों का पर्यावरणीय महत्व एवं प्रासंगिकता''। इसका शुभारंभ संगोष्ठी के मुख्य अतिथिश्री सलिल बिश्नोई, विधायक, कानपुर ने द्वीप प्रज्ज्वलित करके किया। उन्होंने कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी एक महान पर्यावरणविद् थे जिन्होंने 15वीं शताब्दी में पर्यावरण संदेश, धर्म के माध्यम से पूरे विश्व को दिया। बिगड़ते प्रदूषण का सीधा संबंधा अव्यवस्थात, अनियोजित एवं दिशाहीन विकास तथा मानव की असीमित लालसा से है। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने कहा कि हमारे प्राचीन धर्मग्रंथों में निहित तथा परम्परागत ज्ञान का प्रयोग करके इस विश्वव्यापी समस्या का समाधान किया जा सकता है।

पांच जून को पौधारोपण करते मुख्यातिथि चौधरी कुलदीप सिंह बिश्नोई साथ हैं गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन के अध्यक्ष श्री हनुमान सिंह बिश्नोई व अन्य पदाधिकारी।

संगोष्ठी में डूंगर महाविद्यालय बीकानेर की पूर्व प्राचार्या डॉ. सरस्वती बिश्नोई ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण की कीमत पर विकास का समर्थन नहीं किया जा सकता तथा भवन निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों में पर्यावरण के संरक्षण का पूरा ध्यान रखना आवश्यक है, नहीं तो मानव का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

गुरु जम्भेश्वर संस्थान के अध्यक्ष एवं पूर्व ए.सी.पी. श्री हनुमान सिंह बिश्नोई ने कहा कि प्रदूषित पर्यावरण से मनुष्य के विचार एवं भावों पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है जिससे सामाजिक सदभावना का वातावरणा खराब होता है। गुरु जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान के प्रभारी डॉ. किशनाराम बिश्नोई ने गुरु जम्भेश्वर के पर्यावरण सिद्धांतों का महत्व वर्तमान युग में उनकी शिक्षाओं के पालन से कैसे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का निराकरण किया जा सकता है, पर प्रकाश डाला।

गुरु जम्भेश्वर विश्व विद्यालय हिसार के पर्यावरण विभाग के अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष प्रोफेसर नरसीराम बिश्नोई ने कहा कि वाहनों, फैक्ट्रियों की चिमनियों से निकलने वाले धुंए व गेहूं व चावल की पराल जलाने से उत्पन्न कार्बन डाईऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साईड एवं ग्रीन हाउस गैस इत्यादि से वायुमंडल का तापमान बढता है तथा पिछले 50 वर्षों से वातावरण में कार्बन डाईआक्साईड की मात्रा 21 गुणा बढ़ी है तथा इसी रफ्तार से प्रदूषण एवं धरती का तापमान बढ़ता रहा तो आने वाले कुछ वर्षों में 60 से 70 प्रतिशत तक हिमालय के ग्लेशियर खत्म हो जायेंगे तथा पानी की गम्भीर समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

इसी संगोष्ठी में जाम्भाणी साहित्य आकादमी के कोषाध यक्ष श्री आर. के . बिश्नोई ने कहा गुरु जम्भेश्वर भागवान की शब्दवाणी एवं साहित्य में पर्यावरण संरक्षण की विचारधाराएं आज से 530 वर्ष पूर्व ही निहित कर ली गयी थी जिसके संबंध में विश्व ने अब सोचना शुरू किया है। इस अवसर पर गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के प्रो. एन.

के. बिश्नोई ने कहा कि इस भौतिक युग में पर्यावरण संरक्षण तथा पुनर्निर्माण के लिए उर्जा के वैकल्पिक स्त्रोत विशेषकर सौर उर्जा के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि सरकार सौर ऊर्जा योजना को अनुदान इत्यादि देकर आकर्षक बनाएं ताकि लोग इसे अपना सके।

प्रोफेसर विनोद बिश्नोई ने कहा कि इस वर्ष 2013 में '' विश्व पर्यावरण दिवस'' की थीम है '' खाद्य पदार्थों की बर्बादी को रोकना'' क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ के Food Agriculture Organisation (FAO) के अनुसार विश्व में हर साल 1.3 अरब टन खाद्य पदार्थ बर्बाद हो रहा है दूसरी और विश्व में हर सात में से एक व्यक्ति की भूख के कारण मौत होती है। इस अवसर पर जांभाणी साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष डा. कृष्णलाल बिश्नोई ने काव्यपाठ के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मंच संचालन डा. विनोद बिश्नोई व महेश बिश्नोई ने किया।

इसी क्रम में 5 जून 2013 को पर्यावरण दिवस के अवसर पर चौ. कुलदीप बिश्नोई, सांसद लोकसभा द्वारा संस्थान परिसर में आयेजित पर्यावरण सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए तथा उन्होंने अपने हाथों से एक पेड़ लगाकर **'पेड़ लगाओ एवं बचाओ'** अभियान की शुरूआत की तथा आह्वान किया कि प्रत्येक मनुष्य एक पेड़ लगाए एवं उसका संरक्षण करने का प्रण ले ताकि हम इस दिवस की सार्थकता हेतु वास्तव में कुछ कर पाएं। इस अवसर पर श्री पी.आर. बिश्नोई I.A.S., श्री अशोक बिश्नोई H.C.S., बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान सुभाष देहडू, उपाध्यक्ष अमरसिंह मांझू, रामकुमार कड़वासरा, ओमप्रकाश जौहर, सेवक दल सचिव धोलू राम भादू, जीव रक्षा प्रदेशाध्यक्ष कामरेड रामेश्वर डेलू, अमर ज्योति के सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई, मालाराम बिश्नोई सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर आई.ए.एस. में चयनित होने वाले अशोक गोदारा व पर्यावरण प्रेमी राणा राम बिश्नोई सहित अनेक समाजसेवियों को सम्मानित भी किया गया।

खातेगांव में सामूहिक विवाह आयोजित

मध्य प्रदेश के नीमगांव व खातेगांव में आयोजित होने वाले सामूहिक विवाह पूरे समाज में अपनी तरह के कार्यक्रम हैं। अप्रैल में नीमगांव में सामूहिक विवाह आयोजित हुआ तो 19 मई को खातेगांव में यह सामूहिक विवाह का कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित हुआ। बिश्नोई मण्डल खातेगांव द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन का यह सतरवां वर्ष था। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सामूहिक विवाह व सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें 17 जोड़ों की शादी सम्पन्न हुई। इस समारोह में मध्यप्रदेश सरकार के पशुपालन मंत्री श्री अजय बिश्नोई मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित थे। इस शुभ अवसर पर वर्तमान विधायक बृजमोहन जी तथा पूर्व विधायक कैलाश व जनपद अध्यक्ष रामअवतार पटेल, हरदा जिला कांग्रेस अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण पंवार, हरदा मंडी उपाध्यक्ष राधेश्याम सहारण, भूरेलाल खोड़, रामदयाल जी झुरिया, हीरालाल खोखर, बिश्नोई सभा डबवाली के सचिव श्री इन्द्रजीत धारणियां, बिश्नोई सभा सिरसा के प्रचार मंत्री डा. मनीराम सहारण, जगदीश बैनीवाल तथा जोधपुर से गोकल जी सहू आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री किशन लाल खिलेरी ने किया तथा श्री राजेश बिश्नोई ने सभी का धन्यवाद किया।

सामाजिक क्षति

श्री जगदीश खीचड़ सुपुत्र श्री रामप्रताप जी निवासी वार्ड 23, रावतसर, जिला हनुमानगढ़ राजस्थान का स्वर्गवास दिनांक 20-05-2013 को 69 वर्ष की आयु में हो गया। आप बिश्नोई मंदिर रावतसर के प्रधान, एक सामाजिक कार्यकर्ता एवं 1986 से अ.भा.ज. सेवक दल के वरिष्ठ सेवक रहे है। भगवान आपकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें व इस दु:खद बेला में आपके परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

भूल सुधार : अमर ज्योति के जून 2013 के अंक में पृष्ठ 16 पर बिश्नोई सभा कुरूक्षेत्र का बैंक अकाउंट नम्बर A/C No. 2431011004913 UCO BANK छपा है कृपा करके इसे A/C No. 24310110004913 UCO BANK पढ़ा जाए।

विश्व के कोने–कोने तक पहुंचेगा वीर बलिदानी बिश्नोइयों का संदेश

साको-363 (अमृता की खेजड़ी) हिन्दी फिल्म बनाने की घोषणा,
अमृता रायचन्द बनेगी अमृतादेवी बिश्नोई

जोधपुर। साको 363 (अमृता की खेजड़ी हिन्दी फिल्म) की शूटिंग का शुभ मुहूर्त 5 जून को स्थानीय टाउन हॉल में मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्दजी महाराज के सान्निध्य में विधिवत पूजन के साथ हुआ। इस अवसर पर आचार्य रामानन्दजी महाराज ने फिल्म निर्माण करने वालों एवं कलाकारों को आशीर्वाद दिया और कहा कि वृक्षों के लिए बलिदान की अद्वितीय घटना आज से ठीक 282 वर्ष 8 माह 17 दिन पहले हुई थी। इतने लम्बे समय तक यह घटना इतिहास के पन्नों में अंकित होने के बावजूद भी दबी हुई पड़ी रही। फिल्म निर्माता सूरज बिश्नोई, निर्देशक कल्याण सीरवी, साहित्यिक सलाहकार रामरतन बिश्नोई और इनकी टीम ने जो प्रयास किया है वह निश्चित रूप से सफल होगा। आज तक अन्य लोगों ने भी क्षेत्र में प्रयास किए मगर वो सफल नहीं हो पाए। आज का कार्यक्रम देखने से सब लोगों को इसकी सफलता का विश्वास हो चुका है। उन्होनें कहा कि ये घटना संवेदनशील है। जाम्भोजी ने आज से 527 वर्ष पहले विश्व संरक्षण का जो संदेश दिया था। इस फिल्म के माध्यम से पुन: यह विश्व के कोने कोन तक पंहुचेगा।जिस पर उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस फिल्म को ऑस्कर जीतने की अग्रिम बधाई दी।

जोधपुर टाउनहॉल में अमृतादेवी के किरदार में मंच पर उपस्थित अभिनेत्री अमृता रायचन्द एवं समारोह को फिल्म के बारे में जानकारी देते हुए श्री मरूधरा फिल्मस के साहित्यिक सलाहकार रामरतन बिश्नोई।

फिल्म के निर्देशक कल्याण सीरवी ने बनाई जा रही फिल्म की विशेषताएं बताई। मरूधरा फिल्मस की ओर से किए जा रहे प्रयासों को विस्तार से बताया और इस काम की सफलता के लिए सहयोग की अपील की। फिल्म के निर्माता सूरज बिश्नोई ने इस फिल्म को बनाने के लिए लम्बे समय से जो प्रयास किए हैं उसकी जानकारी दी और बताया कि एक दशक से भी पहले से उनका चिंतन इस ओर था। साहित्यिक सलाहकार रामरतन बिश्नोई ने सभी आगन्तुकों का तहेदिल से स्वागत किया। फिल्म स्टोरी की साहित्यिक जानकारी देने के साथ ही प्रमाणिकता पर प्रकाश डाला। बिश्नोई समाज को विश्वास दिलाया कि फिल्म में सारी सामग्री 29 नियम, जाम्भोजी के संदेश, बिश्नोई समाज की परम्पराएं, रहन सहन, पहरान, पर्यावरण संरक्षण, वन्यजीव संरक्षण की भावना आदि बिन्दुओं पर बारीकी से ध्यान रखते हुए तैयारी की गई है। फिल्म की मुख्य कलाकार अमृता रायचन्द ने जनसमूह के सामने अपना प्रथम परिचय अभिनय के साथ दिया। उन्होनें श्रीमती अमृतादेवी बिश्नोई की वेशभूषा में और हाथ में लाठी लेकर रंगमंच पर उपस्थित होते ही कहा– ''लीलो रूंख नी घावणो, अनै घावै द्यो प्राण, सिर सांटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण।'' कुछ क्षण के लिए शांत रहकर उसने जोश के साथ बोला लीलो रूंख नी घांवण दू ली, दुष्ट नेड़ो नी आवण दूली, मत कर गरव गिरधर भण्डारी, बिश्नोईयां री बेटी हूं, काम पड़या सिर सूंप सकूं हूं, धर्म कदे नी जावण दूली। इसके साथ ही ताालियों की गड़गड़ाहट जाम्भोजी की जयकार के साथ टाउनहाल को गुंजायमान कर दिया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने वाली एक टीशर्ट लांच की गई। जिसका ब्राण्ड है ' दा ट्री हगर्स। 'अतिथिगण ने इस मौके पर श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीवरक्षा प्रदेश संस्था राजस्थान के स्थापना दिवस पर प्रकाशित 'स्मारिका 2013' का विमोचन किया। जिसमें साको-363 फिल्म का विवरण भी मुद्रित है।

❐ **रामरतन बिश्नोई (एम.कॉम.साहित्यकार)**
नागौर, राजस्थान
मो. 9214118849

जांभाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रम सम्वत् 2070, आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी : 7-07-2013, रविवार, प्रात: 10:18 बजे

उतरेगी : 8-07-2013, सोमवार, अपराह्न 12:43 बजे

विक्रम सम्वत् 2070, श्रावण मास की अमावस्या

लगेगी : 5-08-2013, सोमवार, रात्रि 01:32 बजे

उतरेगी : 6-08-2013, मंगलवार, रात्रि 03:20 बजे

विक्रम सम्वत् 2070, भाद्रपद की अमावस्या

लगेगी : 4-09-2013, बुधवार, सांय 4:21 बजे

उतरेगी : 5-09-2013, वीरवार, सांय 05:05 बजे

पुजारी : बनवारी लाल सोढ़ा (जेसलां वाले) मो.: 094164-07290

जन्माष्टमी मेला : 28 अगस्त, 2013 (बुधवार) – हिसार, पींपासर, मेहराना धोरा, लोहावट, धोरीमन्ना, फिटकासनी, मालवाड़ा, डबवाली, कांठ

भाद्रपद अमावस्या मेला : 5 सितम्बर, 2013 (गुरूवार) रामड़ावास, जांगलू, सोनड़ी, मेयावा, भींयासर, रणीसर

खेजड़ली शहीदी मेला : 14 सितम्बर, 2013 (शनिवार)

जाम्भोलाव मेला : 19 सितम्बर, 2013 (गुरूवार)

उन्नतीस धर्म नियम

1. तीस दिन सूतक रखना।
2. पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
3. प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
4. शील का पालन करना व संतोष रखना।
5. बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
6. द्विकाल संध्या-उपासना करना।
7. संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
8. निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
9. पानी, ईन्धन और दूध को छानबीन कर प्रयोग में लेना।
10. वाणी विचार कर बोलना।
11. क्षमा-दया धारण करना।
12. चोरी नहीं करनी।
13. निन्दा नहीं करनी।
14. झूठ नहीं बोलना।
15. वाद-विवाद का त्याग करना।
16. अमावस्या का व्रत रखना।
17. विष्णु का भजन करना।
18. जीव दया पालणी।
19. हरा वृक्ष नहीं काटना।
20. काम,क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
21. रसोई अपने हाथ से बनानी।
22. थाट अमर रखना।
23. बैल बधिया नहीं कराना ।
24. अमल नहीं खाना।
25. तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
26. भांग नहीं पीना।
27. मद्यपान नहीं करना।
28. मांस नहीं खाना।
29. नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

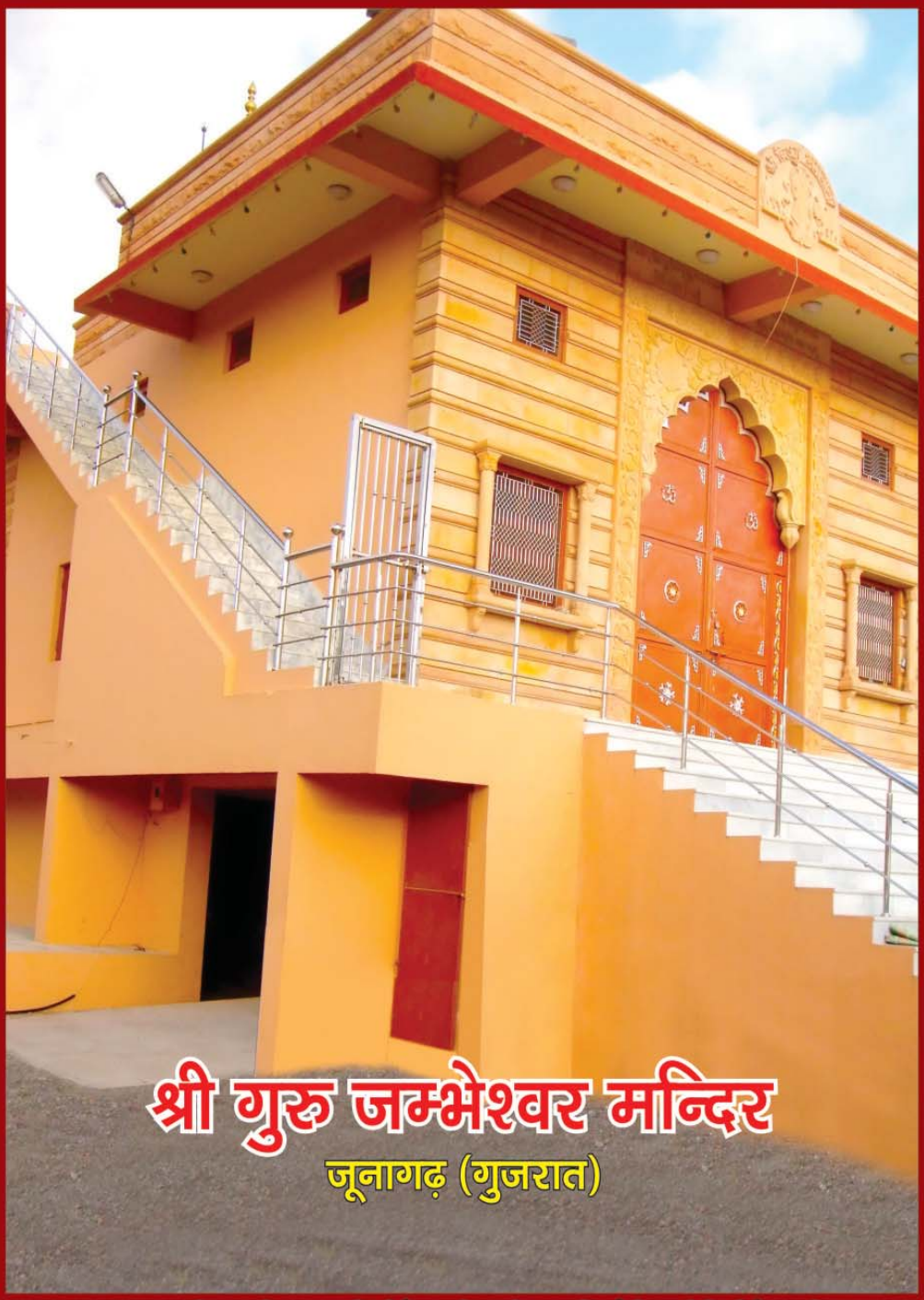

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने सूचना प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जुलाई, 2013 को प्रकाशित किया।